

जनवरी 2018

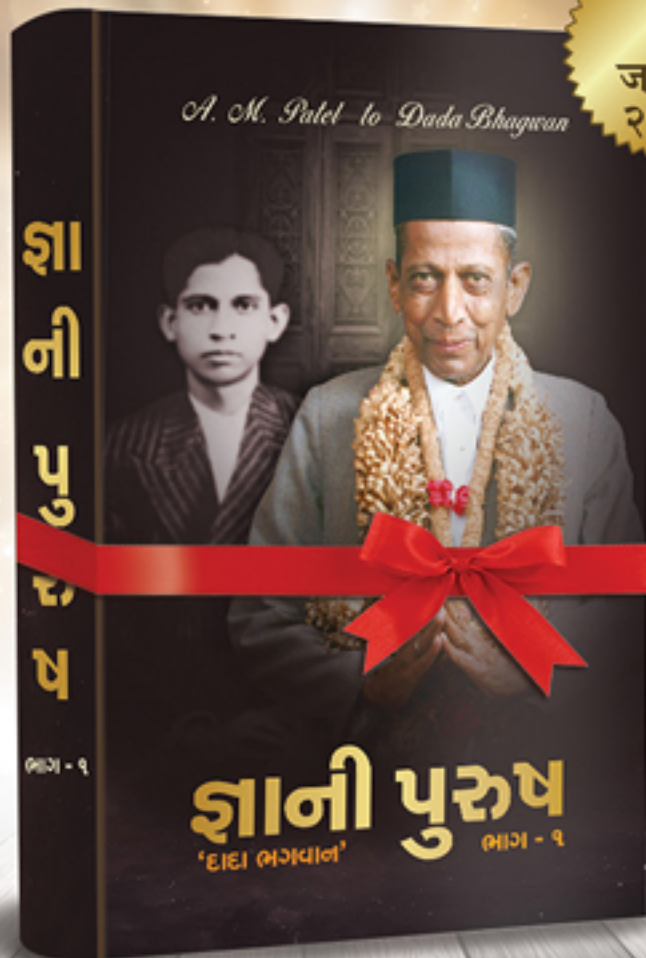
कीमत ₹ 15

# दादावाणी

ग्रंथ विमोचन

₹

जनवरी  
२०१८



अनेक गुण संपन्न ज्ञानी का बचपन निराला, यहाँ इस ग्रंथ में शामिल हुआ; वर्णित उनके स्वमुख से, संकलित होकर जगकल्याण हेतु समर्पित हुआ!

संपादक : डिम्पल मेहता

वर्ष : 13 अंक : 3

अखंड क्रमांक : 147

जनवरी 2018

संपर्क सूत्र :

त्रिमंदिर, सीमंधरसिटी,

अहमदाबाद-कलोल हाइ-वे,

पो.ओ.: अडालज,

जि.: गांधीनगर-382421.

फोन : (079) 39830100

email: dadavani@dadabhagwan.org

www.dadabhagwan.org

दादावाणी संबंधी शिकायत के लिए:

8155007500

**Printed & Published by**

**Dimple Mehta** on behalf of  
**Mahaveideh Foundation**

Simandhar City,

Adalaj - 382421,

Dist-Gandhinagar.

**Owned by**

**Mahaveideh Foundation**

Simandhar City,

Adalaj - 382421,

Dist-Gandhinagar.

**Printed at**

**Amba Offset**

B-99, GIDC, Sector-25,

Gandhinagar - 382025.

**Published at**

**Mahaveideh Foundation**

Simandhar City,

Adalaj - 382421,

Dist-Gandhinagar.

Total 32 pages including cover

**सबस्क्रिप्शन ( सदस्यता शुल्क )**

**15 साल**

भारत : 1500 रुपये

यू.एस.ए. : 150 डॉलर

यू.के. : 120 पाउन्ड

**वार्षिक**

भारत : 100 रुपये

यू.एस.ए. : 15 डॉलर

यू.के. : 12 पाउन्ड

भारत में D.D./M.O.

'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम से

संपर्कसूत्र के पते पर भेजें।

# दादावाणी

मन का चलता तन चले...

**संपादकीय**

परम पूज्य दादाश्री से ज्ञान प्राप्त होने के बाद, जब आत्मा के यथार्थ सुख की अनुभूति होती है तब समझ में आता है कि यह संसार एक फँसाव है। ज्ञान के आधार पर इस जीवन का ध्येय निश्चित हो जाता है कि इस देह से शुद्ध ब्रह्मचर्य का पालन करके दादाश्री के जगत् कल्याण के मिशन में निमित्त बनना है। ब्रह्मचर्य पालन करने का निश्चय होने के बाद भी ब्रह्मचर्य के इस निश्चय को कौन कमजोर कर देता है? इस संदर्भ में कबीर साहब ने कहा है कि 'मन का चलता तन चले, ताका सर्वस्व जाय।'

आज के ज्ञान की समझ से ब्रह्मचर्य पालन करने का निश्चय दृढ़ होता है लेकिन पूर्वजन्म के ज्ञान की समझ संपूर्ण रूप से समझ वाली नहीं थी उसके परिणाम स्वरूप आज का मन बना। अब, यह मन दोनों तरफ का बताता है विषय का मोह भी होता है और ब्रह्मचर्य का भाव भी होता है। वह पसंद-नापसंद के बीच उछलकूद करवाता है। यह मन तो ज्ञानी से भी दूर ले जाता है। मन के कहे अनुसार चलने वाले का क्या भरोसा रखना? मन के कहे अनुसार खुद ही लॉ बुक बनाता है और फिर उसी के अनुसार चलता है। मन के कहे अनुसार चले तो वह मिकेनिकल कहलाएगा। वह कब गिर जाएगा वह कहा नहीं जा सकता।

मन तो विरोधाभासी है। एक तरफ तो ब्रह्मचर्य का पालन करना है लेकिन वह किस तरफ चल रहा है उसकी पूरी तरह से छानबीन कर लेनी पड़ेगी क्योंकि मन की दिशा पर चलते हुए, वह मन कब ध्येय चुका कर शादी करवा दे उसमें सावधान रहना जरूरी है। खुद को निरंतर जागृति रखनी है और चेक करते रहना है, कि मुझे किस रास्ते पर चलना है।

हम ने निश्चय ज्ञान से किया है या मन से, उसे चेक करते रहना चाहिए। पोल वाले निश्चय को धीरे-धीरे समझ और ज्ञान से, ज्ञान वाला निश्चय बनाकर दृढ़ करके रखना है। मन खुद के सिद्धांत के अनुरूप बताए तो स्वीकार्य है लेकिन ध्येय के विरुद्ध बताए तो उसका हरगिज नहीं चलाना। मन को तो असीम जय जयकार करने में, सामायिक करने में, सत्संग में आने में बोरियत होती है तब उसके कहे अनुसार नहीं करना है और उसका विरोध करना है। उसमें तन्मयाकार नहीं होना है। एक बार होने के बाद जो निश्चय कभी भी बदले नहीं, वही सच्चा! निश्चय वाला कभी मन की सुनता होगा क्या?

प्रस्तुत अंक में दादाश्री, किस तरह से ध्येय के सामने मन बाधक है, उसकी जागृति देते हैं। इस मन को मारना नहीं है लेकिन मन के साथ कला से काम निकाल कर, उसे ज्ञान से अलग रख कर निकाल करने की चाबी देते हैं। करोड़ों जन्मों के पुण्य से ब्रह्मचर्य का ध्येय प्राप्त हुआ है अब ध्येय की पूर्णाहुति के लिए मन के अनुसार नहीं चल कर आज के ज्ञानसमझ के आधार पर और ज्ञानी के आश्रय में रह कर ध्येय सिद्धि का पुरुषार्थ कर लें, यही अभ्यर्थना।

जय सच्चिदानंद

पाठकों से...

‘दादावाणी’ सामायिक में मुद्रित पाठ्य सामग्री मूलतः गुजराती ‘दादावाणी’ का हिन्दी रूपांतर है। कोष्ठक में दिए गए शब्द या तो अंग्रेजी शब्द का अर्थ हैं अथवा शब्द का तात्पर्य स्पष्ट करने हेतु वृद्धित किए गए वाक्यांश हैं। यहाँ पर ‘आत्मा’ शब्द को गुजराती और संस्कृत की तरह पुल्लिंग में प्रयोग किया गया है। जहाँ पर भी ‘चंदूभाई’ नाम का प्रयोग हुआ है, वहाँ पर पाठक खुद को समझें। ‘दादावाणी’ के इस अंक में अगर आप कोई बात न समझ पाएँ तो प्रत्यक्ष सत्संग में पधारकर समाधान प्राप्त करें। अनुवाद में कोई कमी नज़र आए तो हमें सूचित करने की कृपा करें, ताकि भविष्य में सुधार किया जा सके। ऐसी क्षतियों के लिए हम आपके क्षमाप्रार्थी हैं।

मन का चलता तन चले...

‘नापसंद’ नहीं रहना चाहिए

**प्रश्नकर्ता :** यों अगर ‘दादा भगवान ना असीम जय जयकार हो’, बोलना हों न तो बोलना अच्छा लगता है लेकिन अगर दस-पंद्रह मिनट से ज्यादा बोलना पड़े तो फिर मन को अच्छा नहीं लगता।

**दादाश्री :** ऐसा? क्योंकि उसकी वैल्यू (कीमत) समझ में नहीं आई है। लोग तो समझते हैं कि ये ‘राम-राम’ के जैसा बुलवा रहे हैं। कुछ लोगों को तो पहली बार में ऐसा ही समझ में आता है न? लोग नासमझ हैं न इसलिए लेकिन यह वैसा नहीं है। साथ मैं ऐसा भी कहता हूँ न कि ‘दिस इज़ द कैश बैंक ऑफ डिवाइन सॉल्यूशन!’ (दिव्य समाधान का यह नकद बैंक है।)

**प्रश्नकर्ता :** फिर जब बहुत ज्यादा हो जाए न तो बोरियत होने लगती है।

**दादाश्री :** लेकिन बोरियत किसे होती है? ‘मन’ को बोरियत होती है, बोरियत क्या ‘हमें’ होती है? हम क्या मन का मुताबिक चलेंगे? हम तो मनुष्य है।

इंसान उसे कहते हैं कि जिसे कुछ भी ‘नापसंद’ हो ही नहीं और जब तक कोई भी चीज़ ‘नापसंद’ होगी, तब तक जोर ज़बरदस्ती से वह करना ही पड़ेगा। जैसे आपको दवाई ‘नापसंद’

हो, तब भी पीनी पड़ती है न? वर्ना यदि अगर वह छह रस ले, साथ में कड़वा भी ले तो फिर कड़वी दवाई नहीं लेनी पड़ती लेकिन वह नहीं लेते इसलिए फिर कड़वी दवाई लेनी पड़ती है। रस तो पूरे करने पड़ेंगे न?

**प्रश्नकर्ता :** ‘दादा भगवान ना असीम जय जयकार हो’, बोलना अच्छा लगता है लेकिन जब फिर यदि लंबा चले न, तब ऐसा लगता है कि अब इसे बंद कर दें।

**दादाश्री :** लंबा किसे कहते हो? तेरे लंबे-छोटे का तो ठिकाना ही नहीं है न? तेरी तो डिक्शनरी ही अलग तरह की है! जितना ‘पसंदीदा’ आया उतना ही होता है और कुछ नहीं होता। तब तो ये सारी दवाईयाँ पसंद होंगी तभी पीते होंगे न? संडास लगे तब जाना अच्छा लगता है? लोगों को ऐसे खाँसना अच्छा लगता होगा? छींकना अच्छा लगता होगा? ‘नापसंद’ को निकाल देना, वही पुरुषार्थ है। ‘नापसंद’ अर्थात् आप क्या कोई मालिक हो? कौन हो आप? कहते हो ‘मुझे पसंद नहीं है।’ लोगों को तो पढ़ाई करना भी अच्छा नहीं लगता न। स्कूल में जाना, ठंड में निकलना अच्छा लगता होगा क्या? लेकिन जाना ही पड़ता है न? ऐसे भी बच्चे हैं जिन्हें बिस्तर से उठना भी पसंद नहीं है। ऐसे नहीं होते?

**प्रश्नकर्ता :** होते हैं।

**दादाश्री :** अरे, ये सभी बच्चे नहीं उठते। वह तो, उन सभी को उठाना पड़ता है।

**प्रश्नकर्ता :** मुझे भी सुबह उठना अच्छा ही नहीं लगता।

**दादाश्री :** किसी को भी अच्छा नहीं लगता लेकिन उठे बगैर चारा ही नहीं है न! चलेगा ही नहीं।

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन मन ऐसा समझाता है कि ये (कीर्तन भक्ति) गाने से कुछ भी नहीं होगा।

**दादाश्री :** जब वह ऐसा उल्टा समझाए तब क्या आपको कहना नहीं चाहिए कि 'आज दिन तक तूने मेरा क्या भला किया है, वह मैं जानता हूँ इसलिए तेरी सलाह एक तरफ रख। तेरी बात हमें नहीं सुननी है।' वह अलग है और हम अलग हैं, हमें क्या लेना-देना? अभी तक हम ऐसा समझते थे, कि यह सगा भाई ही है इसलिए उसके कहे अनुसार चल रहे थे?

ब्रह्मचारी किसे कहते हैं कि जिसके लिए कुछ 'नापसंद' हो ही नहीं। कोई कड़वी दवाई देते समय आपसे पूछें कि 'आपको अच्छी लगेगी?' तब कहे, 'हमें हर्ज नहीं है।' 'नापसंद' शब्द तो कहीं बोला जाता होगा? लोग क्या ये सभी दवाईयाँ पसंद से पीते होंगे? रोज़ कितनी 'नापसंद' चीज़ें करनी पड़ती हैं?

**प्रश्नकर्ता :** बहुत सारी चीज़ें।

**दादाश्री :** इसलिए जब मन को 'नापसंद' हो तो, तब हमें 'जय जयकार हो' बोलें तो क्या फायदा? अरे, बल्कि अधिक फायदा होगा। मन के विरुद्ध करेंगे तो एक तरफ मन समझ जाएगा कि अब अपनी मानते नहीं हैं इसलिए अब अपने बोरिया-बिस्तर बाँध कर दूसरे गाँव जाने

की तैयारी कर लो। उसका अपमान होता है तो बहुत ही अच्छा रहेगा। मन की तो मानना ही नहीं चाहिए न! 'मन का चलता तन चले, ताका सर्वस्व जाय।'

**जानवर चलते हैं, मन के कहे अनुसार**

मन के कहे अनुसार चलते हैं इसलिए जानवर कहलाते हैं। ये सभी जानवर मन के कहे अनुसार चलते हैं। हिंदुस्तान के लोग मन के कहे अनुसार नहीं चले, ऐसा होना चाहिए।

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन, अधिकतर तो मन के कहे अनुसार ही चलते हैं।

**दादाश्री :** यह हम जो बता रहे हैं, वह ज्ञान है इसलिए धीरे-धीरे बदलाव करना। ज्यादातर ऐसा कैसे कह सकते हैं जिससे मन चिढ़ जाए, जिस बात में हमें परेशानी नहीं हो, उस बारे में चला सकते हैं। हमें समभाव से निकाल करना है। मन को इस तरह से नहीं चलने देना है। ऐसा नहीं होने देना है कि मन हमें खींच ले जाए, हमें मन को अपनी तरह से चलाना है। मन तो जड़ है। ये लोग मन के अनुसार चलते हैं तो उनका सर्वस्व चला जाएगा।

**वर्ना, मन पड़ जाएगा ढीला**

मन के कहे अनुसार चलना ही नहीं चाहिए। मन का कहा यदि अपने ज्ञान के अनुसार हो तो उतना एडजस्ट (सेटिंग) कर लेना चाहिए। अपने ज्ञान के विरुद्ध चले तो बंद कर देना चाहिए।

**प्रश्नकर्ता :** यदि मन के कहे अनुसार चले तो नियम टूट जाएगा, ऐसा है न?

**दादाश्री :** फिर नियम रहा ही कहाँ! किसी के बीच में अक्लमंदी करनी। मन नियम वाला है लेकिन हमें तो ज्ञान के अनुसार चलना है।

नहीं तो, मन भी नियम वाला है, उस वजह से ही तो इस जगत् के लोग बहुत अच्छी तरह से रह सकते हैं।

हमारा मन बहुत कहता है कि 'यह खाओ, यह खाओ' लेकिन नहीं। वर्ना मन ढीला पड़ जाएगा, देर ही नहीं लगेगी। यदि ढीला पड़ गया तो पूरे दिन उसकी कलह रहेगी, दयाजनक स्थिति। तू तो चंदूभाई को रुलाने वाला आदमी है, तू क्या कोई ऐसा-वैसा आदमी है? तो फिर यह मन तो उसका, चंदूभाई का है। हमें क्या लेना-देना? अब तो हम शुद्धात्मा हैं।

**प्रश्नकर्ता :** निःसंदेह।

**दादाश्री :** मन चंदूभाई का है। हमें उस मन के कहे अनुसार नहीं चलना है। जो मन के कहे अनुसार चलेगा न, उसका ब्रह्मचर्य नहीं टिक पाएगा। कुछ भी नहीं टिकेगा, बल्कि अब्रह्मचर्य हो जाएगा। मन का और हमारा क्या लेना-देना?

**मन की लॉ बुक चुकवा दे ध्येय**

**प्रश्नकर्ता :** एक बार जब हम सत्संग में से उठ कर बाहर चाय पीने गए थे तब आपने कहा था कि बाकी सभी बातों में ऐसी छूट रखना लेकिन सिर्फ ब्रह्मचर्य की बात में ही मन की मत मानना।

**दादाश्री :** बाकी की सभी बातों में मान लेना है? अर्थात् आपको उसमें रुचि (रस) हो तो मानो न! मुझे क्या हर्ज है? आपको रुचि है तो मुझे कोई हर्ज नहीं है। ब्रह्मचर्य में मानोगे तो भी मुझे कोई हर्ज नहीं है।

**प्रश्नकर्ता :** ऐसा नहीं।

**दादाश्री :** तो?

**प्रश्नकर्ता :** अर्थात् इन दोनों में अंतर समझ में नहीं आया इसलिए पूछा।

**दादाश्री :** यह तो, ब्रह्मचर्य में आप स्ट्रोंग (दृढ़) रहो इसलिए ऐसा कहना चाहता हूँ, उस हेतु से ऐसा कहा था इसका मतलब दूसरी बातों के लिए आप ऐसा कह रहे हो कि 'मन का बाकी सब आराम से सुनना।' आपका काम हो गया(!) क्या हासिल कर लोगे इससे? कैसी वकालत कर रहे हो?

**प्रश्नकर्ता :** खुद की लॉ बुक (नियम किताब) में ले जाते हैं!

**दादाश्री :** लॉ बुक तो वही की वही है। इसके पक्षधर कैसे लोग है? विरोधी के पक्षधर! अब समझदार हो जाओ। वर्ना नहीं चलेगा इस दुनिया में। वह तो आप मन के कहे अनुसार लॉ बुक का उपयोग कर रहे हो। उसी में, उतने ही सर्कल में। क्या सुबह सत्संग में आने के लिए आपको कभी देर हो जाती है या ऐसी वैसी कोई भूल नहीं होती। अगर यहाँ आने में भूल हो जाए तो हम ऐसा नहीं कहते कि आप रेग्युलर हो जाओ। फलाना ऐसा हो गया, ऐसा कुछ नहीं है। ये तो, आपकी वही भूलें और आप वही घोटाले करते हो। आप मन के कहे अनुसार लॉ बुक का उपयोग करते हैं। उसका रक्षण करते रहते हो। उसका रक्षण करते हो, तो क्या होगा उसका? अब आप क्या करोगे? आप भी रक्षण करोगे? ये तो वही की वही भूलें। और कोई नई तरह की भूलें है दुनिया में?

**उड़े, पतंग या मन?**

**प्रश्नकर्ता :** दो-तीन दिनों से मुझे पतंग उड़ाने का बहुत मन हो रहा है, तो क्या वह नहीं उड़ानी चाहिए?

**दादाश्री** : जिसे पतंग उड़ाने की इच्छा होती है, वह कब ब्रह्मचर्य पालन कर पाएगा? ऐसे व्यक्ति को घुसने देना चाहिए क्या?

**प्रश्नकर्ता** : मैंने रात को निश्चय किया था कि अब हमें पतंग नहीं उड़ानी हैं और सुबह उठा तभी से अंदर हो रहा है कि 'उड़ानी तो चाहिए न!'

**दादाश्री** : तब तो फिर ब्रह्मचर्य का पालन कब करोगे? पैंतालीस साल बाद कहोगे कि अब 'मुझे शादी करनी है' तो तब पत्नी नहीं मिलेगी। राह देखने पर भी नहीं मिलेगी। अतः निश्चयबल होना चाहिए।

पतंग के बारे में तो मन दो महीनों से पीछे नहीं पड़ा है न? कितने घंटों से पीछे पड़ा था।

**प्रश्नकर्ता** : चार-पाँच घंटों से।

**दादाश्री** : उन चार-पाँच घंटों में ही तू ढीला पड़ गया तो फिर छः महीनों तक पीछे पड़ेगा, 'शादी कर लो, शादी कर लो,' उस बारे में वह प्रमाण सहित सब दिखाएगा तो फिर क्या होगा? मन कहे, 'पतंग उड़ाओ,' तो पतंग उड़ाता है। कुछ देर के बाद मन कहेगा कि ब्रह्मचर्य का पालन कर! अरे, ब्रह्मचर्य तो निश्चय वालों का काम है। क्या तुम्हारे जैसे लोगों का काम है? वे तो पुरुषार्थी लोग! जो पुरुष हो चुका हो! इस प्यादे का क्या काम है वहाँ?

**मन ले जाएगा शादी के मंडप तक**

**प्रश्नकर्ता** : पहले से ही यह सब ऐसा है। सब मन चाहा ही करता है।

**दादाश्री** : देखो न, चार सौ साल पहले कबीर जी ने कहा था, वे कितने समझदार इंसान थे! कहते हैं, 'मन का चलता तन चले, ताका सर्वस्व जाय।' समझदार नहीं थे कबीर जी?

**प्रश्नकर्ता** : समझदार ही कहलाएँगे न।

**दादाश्री** : और यह तो मन के कहे अनुसार चलता रहता है। मन कहे कि 'इससे शादी कर लो' तो कर लोगे?

**प्रश्नकर्ता** : नहीं, ऐसा नहीं होगा।

**दादाश्री** : अभी वह तो कहेगा। जब ऐसा कहेगा उस समय क्या करोगे आप? यदि ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करना हो तो स्ट्रोंग (मजबूत) रहना पड़ेगा। मन तो ऐसा ही कहेगा और आपसे भी बुलवाएगा इसीलिए मैं कह रहा था न कि कल सुबह आप भाग भी सकते हो। उसका क्या कारण है? मन के कहे अनुसार चलने वाले का भरोसा ही क्या? क्योंकि आपका खुद का *चलण* हैं ही नहीं जबकि खुद के *चलण* वाला ऐसा नहीं करेगा।

'मन के कहे अनुसार चलने वाला व्यक्ति यहाँ से चला जाएगा, 'वह किस गारन्टी के आधार पर? अरे लो! अगर मैं तुझे दो दिन तक पानी में हिलाऊँ, ऐसे छपछपाऊँगा न, तो तू परसों ही चला जाएगा। यह तो तुझे पता ही नहीं है। तेरे मन का क्या ठिकाना? बिल्कुल ही बिना ठिकाने का मन। खुद के सेन्टर तक पहुँचा ही नहीं है। मन के कहे अनुसार तो चलते हो अभी भी। 'भागना नहीं है, भागना नहीं है,' यह तो सिर्फ कहने के लिए ही है लेकिन अभी तो न जाने क्या करोगे? स्ट्रोंग आदमी तो कौन कहलाता है कि जो किसी की भी नहीं माने। मन का या बुद्धि या अहंकार का या कोई भगवान आ जाए तो उसकी भी न माने। आपकी तो क्या बिसात? आपको तो अगर मन कहता है कि 'श्मशान में जाऊँ तो मन एतराज नहीं करता और मन एतराज करे कि वहाँ नहीं जाना है तो नहीं जाएगा!'

**प्रश्नकर्ता** : मैंने खुद ने यहाँ दादा के पास

आ कर जो निश्चय किया है, उस बारे में मन की कभी भी नहीं सुनी।

**दादाश्री :** ऐसा? मन सीधी बात कहता है क्या?

**प्रश्नकर्ता :** हाँ, सीधा बोलता है।

**दादाश्री :** क्योंकि उल्टा नहीं बोला है। थोड़ा बहुत उलटा बोले तो आप वह नहीं सुनोगे। लेकिन सात दिनों तक आपको छोड़ेगा नहीं और फिर अंदर वह कहेगा, 'यह ज्ञान तो मिल गया है, अब कोई हर्ज नहीं है। लोगों में अपनी बहुत वैल्यू है। वगैरह वगैरह।' सबकुछ समझा कर चलाएगा अपने को!

**प्रश्नकर्ता :** अब ऐसा नहीं होगा।

**दादाश्री :** आपको बाद में ज़्यादा नुकसान न हो इसलिए आपको सावधान करके कहते हैं कि 'इसमें मन का चलता' छोड़ दो चुपचाप, अपने स्वतंत्र निश्चय से जीयो। अगर मन की ज़रूरत हो तो लेना और अगर ज़रूरत नहीं हो तो उसे एक तरफ रख देना। यह मन तो पंद्रह-पंद्रह दिनों तक घुमा-फिरा कर फिर शादी करवाता है। अरे, बड़े-बड़े संत भी घबरा गए तो आपकी क्या बिसात!

**'नापसंद' ही निकाल दो**

यह कहता है कि 'काम करना अच्छा नहीं लगता लेकिन दादा की आज्ञा है इसलिए काम करते हैं।' अच्छा नहीं लगता कहते ही काम तुरंत चढ़ बैठेगा। अब आपका यह सब रोग जाएगा कब? आपकी शादी करवा दें तो चला जाएगा (!) फिर पत्नी निकाल देगी (!) मार-ठोक कर हिला-हिला कर निकाल देगी।

**प्रश्नकर्ता :** अब आपको हमारे रोग हिला-हिला कर निकाल देने पड़ेंगे?

**दादाश्री :** मैं क्या फालतू बैठा हूँ ये सब निकालने के लिए? मैं निकाल दूँ, ऐसा कह रहा है! मैं कितनों के निकालूँगा, मैं तो बता देता हूँ आपको।

**प्रश्नकर्ता :** आपको ही करना पड़ेगा न?

**दादाश्री :** हाँ, लेकिन मैं तो कह देता हूँ फिर अगर आपकी मरज़ी नहीं होगी तो कैसे निकाल सकूँगा?

**प्रश्नकर्ता :** मरज़ी तो है ही। निकालने ही हैं।

**दादाश्री :** मरज़ी है तो अपने आप ही निकलने लगते हैं। आपके निकलने लगे हैं क्या?

**प्रश्नकर्ता :** जो पसंद नहीं ऐसे काम भी मैं करता हूँ लेकिन आप पूछ रहे हैं इसलिए कहना होगा न कि 'यह 'पसंद नहीं है'।

**दादाश्री :** 'पसंद नहीं है' यह शब्द ही निकाल दो। अपनी डिक्शनरी में इस शब्द की ज़रूरत ही नहीं है।

**खुद के अभिप्राय पर रहना चाहिए स्ट्रोंग**

'इन्हें' (नीरू बहन को) नापसंद कुछ भी नहीं है, सबकुछ पसंद है। इतने सालों से निरंतर हमारे साथ ही रहे हैं लेकिन इन्हें कोई झंझट ही नहीं है न! क्योंकि वे खुद के (ध्येय के) अभिप्राय के अनुसार ही चलते हैं! वे मन की सुनते ही नहीं हैं तब हम ने उनके सामने एक शर्त रखी। मैंने उनसे कहा, 'आपको ब्रह्मचर्य का पालन करना पड़ेगा और इस तरह से चलोगे, तभी इसका पालन हो सकेगा।'

**प्रश्नकर्ता :** वह किस तरह से?

**दादाश्री :** खुद के अभिप्राय पर स्ट्रोंग

रहना चाहिए और क्या करना है? वे ऐसे ही रहते हैं जबकि तू तो अगर अंदर मन कुछ बोलना शुरू करे तो वही सुनता रहता है। फिर अभी तो एक-एक घंटे तक निकाल देता है। दो घंटों तक भी निकाल देता है, चार घंटों तक भी निकाल देता है उसे लेकिन फिर तू एक्सेप्ट (स्वीकार) कर लेता है। वह नहीं चलेगा।

**प्रश्नकर्ता :** यों तो हम इस अभिप्राय में स्ट्रोंग ही है न?

**दादाश्री :** अभिप्राय स्ट्रोंग है लेकिन जब मन विरोध करे न, अगर अभी थोड़ी देर के लिए भी विरोध करे तो फिर भी आप उसे निकाल दोगे लेकिन अगर चार-चार, छः-छः महीनों तक वह माल निकला तो बिगड़ जाएगा!

**प्रश्नकर्ता :** जब मन विरोध करे तब खुद को अपने अभिप्राय पर स्ट्रोंग रहना है और मन जो बताए उसे 'देखते' रहना है?

**दादाश्री :** हाँ, उसे देखते रहना है। तब यदि हमसे पूछे कि ऐसा होता रहता है तो अब क्या करूँ? तब हम उसे स्ट्रोंग कर देते हैं, कि सुनना ही मत। तू उसे देखता रह। देखते ही रहना है। फिर यदि हमें पसंद हो, हमारे अभिप्राय के मुताबिक हो तो भले ही मन उस अनुसार एडजस्ट हो जाए, उसमें कोई हर्ज नहीं है। हमें पसंद आता है और उसे नापसंद हो, उसे पसंद आता है और हमें ना पसंद हो क्योंकि यह मन एक अलग ही चीज़ हो गई है न, इसीलिए हम उसे जीत कर बैठे हैं।

**मन को कब जीत पाएँगे?**

मन की सुननी चाहिए क्या? ज़रूरत के मुताबिक सुन ले फिर बाकी खुद का मनचाहा ही करे। वही कहना चाहता हूँ कि हमारा सिद्धांत

है। तुझे मानना हो तो मान। नहीं मानना हो तो हमें कोई ज़रूरत नहीं है। हम 'वीटो' का उपयोग करेंगे।

मन को तो कब जीत सकते हैं? नज़रे आकर्षित होते ही समझ जाए कि ये मन की वजह से आकर्षित हो रही हैं फिर तुरंत ही मन की सभी बातों को काट दे। यहाँ पर आने के लिए मन मना करे तो उसमें भी उसे काट दे। मन तो भागने के रास्ते ढूँढता है। जहाँ पर मेहनत नहीं करने पड़े, मन वहाँ जाना चाहता है। अगर मन के कहे अनुसार नहीं चलेगा तो सब ठीक हो जाएगा।

अपना निश्चय अपने ध्येय के अनुसार ही है। आज के निश्चय के अनुसार ही करना है हमें। हमारी आज की जो प्लानिंग (आयोजन) है उसके अनुसार ही करना है, मन की प्लानिंग के अनुसार नहीं। वर्ना वह होगा ही नहीं। न तो ब्रह्मचर्य का पालन हो पाएगा और न ही यहाँ पर नहीं रह पाएगा। दादा के पास भी नहीं टिक पाएगा।

**ध्येय का ही निश्चय**

ब्रह्मचारी बनने का तेरा निश्चय है लेकिन तू तो सब इस मन के कहे अनुसार करता है। तो यह सब तेरा है ही कहाँ? वह तो 'मन' ने ऐसा कहा था 'शादी करने में मज़ा नहीं है,' ऐसा सब तुझे मन ने कहा था और तूने एक्सेप्ट किया था।

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन अब तो निश्चय हो गया है न?

**दादाश्री :** अब तेरा निश्चय। अब यदि तू निश्चित करे कि अब 'यह मेरा निश्चय है।' तो फिर मन से कह देना कि 'अब अगर तू उल्टा करेगा, तो तेरी बात तू जाने।' अब तू अपने सिद्धांत के रूप में इसे स्वीकार ले तो यही अपना निश्चय।



**प्रश्नकर्ता :** सिद्धांत के रूप में स्वीकार करने के बाद 'अपना', वर्ना 'मन का'?

**दादाश्री :** तो और किसका? वह क्या उसका है? लेकिन अभी 'अपना' है ही कहाँ यहाँ इस जायदाद (प्रोपर्टी) में? जो अपनी जायदाद थी, वह तो दबा दी है और वह भी अपने कमरे में रहता है और ऊपर से वह चोरी भी करता है।

किसी के घर के पर से यदि खपरैल का टुकड़ा गिरे और चोट लगे, तब भी कुछ नहीं कहता। क्योंकि वहाँ पर मन कहता है कि 'कैसे कहेंगे हम?' वह तो उसका मन जैसा सिखाता है, उसी अनुसार वह बोलता है। अभी हमारा जो सिद्धांत है उसके अनुसार मन चलना चाहिए। मन का कहना नहीं मानना चाहिए।

### सामायिक में चरण, मन का

**प्रश्नकर्ता :** सामायिक में बैठना अच्छा नहीं लगता। भागने का मन करता है।

**दादाश्री :** मन भले ही शोर मचाए लेकिन तुझे क्या लेना-देना? तेरे सिद्धांत के विरुद्ध चलता है क्या? अगर चलता है तो चरण उसी का है अभी भी। वह मना करे तो हमें क्या? वह तो सामायिक ही नहीं करने देगा।

**प्रश्नकर्ता :** पहले शुरुआत में मैं एक-दो साल रेग्युलर सामायिक करता था। तब मुझे वह अच्छा लगता था।

**दादाश्री :** तो फिर तू पसंद-नापसंद के ही मार्ग पर है न! कह रहा है कि मुझे अच्छा लगता था। जो मन की माने वह इंसान ही नहीं कहलाएगा। वह मशीन नहीं कहलाएगी तो और क्या कहलाएगा? खुद का कोई चरण ही नहीं है न! खुद का चरण नहीं होना चाहिए? आप पुरुष हुए हो न?

**प्रश्नकर्ता :** खुद का ही होना चाहिए।

**दादाश्री :** सत्संग में आने के लिए मन मना करे तो क्या करते हो? वहाँ मन की मानते हो?

**प्रश्नकर्ता :** मन की नहीं मानता।

**दादाश्री :** अगर यों मानोगे तो फिर भटक जाओगे न! रहा ही क्या फिर? जानवर भी उसकी मानते हैं, आप भी उसकी मानते हो। अधिकतर बाबतों में मन के विरुद्ध करते हो या नहीं?

**प्रश्नकर्ता :** बहुत बार।

**दादाश्री :** अच्छा, जो मन के चलाने से चले, वह तो मिकेनिकल कहलाएगा। अंदर पेट्रोल डाला इसलिए मशीन चलती रहती है। तुझे भी ऐसा होता है क्या? तब तो अगर तुझे शादी नहीं करनी होगी फिर भी करवा देगा।

**प्रश्नकर्ता :** उसमें में ऐसा नहीं होगा।

**दादाश्री :** कैसे इंसान हो? अगर अपनी इच्छा के अनुसार न चलने देता तो फिर तेरा चरण (वर्चस्व) ही नहीं है।

**प्रश्नकर्ता :** सामायिक करने की इच्छा उतनी स्ट्रॉंग नहीं है।

**दादाश्री :** ओहोहो! तब तो यह सारा धर्म करने की इच्छा ही नहीं है। उसमें फिर स्ट्रॉंग नहीं है न।

सामायिक अड़तालीस मिनट की चीज़ है। अगर अड़तालीस मिनट भी एक जगह पर नहीं बैठ सकता तो फिर ब्रह्मचर्य का पालन कैसे हो पाएगा? उसके बजाय चुपचाप शादी कर ले तो अच्छा है।

ये जो ब्रह्मचर्य का पालन करते हैं, वह ब्रह्मचर्य अर्थात् खुद का निश्चय बल है। कोई

डिगा नहीं सके ऐसा। जो किसी के कहे अनुसार चले वह ब्रह्मचर्य का पालन कैसे कर पाएगा?

**चल रहे हैं कहाँ? दिशा कौन सी?**

ब्रह्मचारी तो कैसा होता है? ऐसा, स्ट्रॉंग पुरुष! उच्च मनोबल वाला! 'वह क्या कोई ऐसा वैसा होता होगा?' इसीलिए तो मैं बार-बार कहता हूँ कि 'आप चले जाओगे, शादी कर लोगे'। तब आप कहते हो कि 'आप ऐसे आशीर्वाद मत देना'। मैंने कहा, 'मैं आशीर्वाद नहीं देता हूँ, मैं तो आपकी स्थिति बता रहा हूँ।' अगर अभी से सावधान नहीं हुए और खुद के हाथ में लगाम नहीं ली तो फिर सब खत्म! 'गाड़ी कहाँ ले जा रहे हो?' तब कहते हैं, 'बैल जहाँ ले जाएँ वहाँ!' बैल जिस दिशा में जाते हैं उस दिशा में गाड़ी जाने देगा कोई? 'यदि बैल ऐसे जा रहे हों तो मार-ठोक कर, कैसे भी करके, इस तरफ ले आएगा। खुद के तय किए हुए रास्ते पर ही ले जाएगा न!'

**प्रश्नकर्ता :** खुद के तय किए हुए रास्ते पर ही ले जाएगा।

**दादाश्री :** आप तो बैल के अनुसार गाड़ी चला रहे हो। 'वे इस तरफ जाते हैं तो मैं क्या करूँ?' कहते हो। तो उसके बजाय शादी कर लो न आराम से! गाड़ी इस तरफ जा रही हो तो फिर कोई अर्थ ही नहीं रहा न! निश्चयबल है नहीं। खुद का कुछ है नहीं। खुद में कोई काबिलियत नहीं है। तुझे क्या लगता है? गाड़ी को जाने देना चाहिए?

**प्रश्नकर्ता :** नहीं जाने देना चाहिए।

**दादाश्री :** फिर यह गाड़ी क्यों जा रही है?

**प्रश्नकर्ता :** आपके कहने पर पता चलता

है कि यह मन के कहे अनुसार किया था। वना पता ही नहीं चलता है।

**दादाश्री :** हाँ, लेकिन पता चलने के बाद समझदार हो जाना चाहिए या नहीं?

**प्रश्नकर्ता :** होना चाहिए।

**मन तो सामायिक में से उठाए**

**दादाश्री :** अब फिर परसों आप ऐसा कहोगे कि 'मुझे अंदर से ऐसा लगा तो मैं सामायिक करते-करते उठ गया!'

**प्रश्नकर्ता :** सामायिक करने बैठते हैं तो मज्जा नहीं आता।

**दादाश्री :** अगर मज्जा नहीं आता तो उसमें हर्ज नहीं है लेकिन मन के कहे अनुसार करे तो उसे नहीं चला सकते।

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन मज्जा नहीं आता इसलिए ऐसा होता है कि अब नहीं बैठना है।

**दादाश्री :** लेकिन यों ऐसी इच्छा नहीं है न तेरी कि मन के कहे अनुसार चलना है?

**प्रश्नकर्ता :** ऐसा तो अब पता चला न!

**दादाश्री :** मज्जा नहीं आए, वह अलग चीज़ है। मज्जा तो, हम समझेंगे कि इसे किसी और जगह पर इन्टरेस्ट (रस) है और इसमें इन्टरेस्ट कम है। इन्टरेस्ट तो हम ला देंगे।

**प्रश्नकर्ता :** मज्जा नहीं आता इसलिए मन बताता है कि अब चलो।

**दादाश्री :** मैं उस मन की बात नहीं कर रहा हूँ। मज्जे और मन का कोई लेना-देना नहीं है।

**प्रश्नकर्ता :** अगर मज्जा नहीं आता तो फिर ऐसा होता है कि अब सामायिक में नहीं बैठना है।

**दादाश्री :** मज़ा क्यों नहीं आता, वह मैं जानता हूँ।

**प्रश्नकर्ता :** मुझे सामायिक में कुछ दिखाई ही नहीं देता।

**दादाश्री :** लेकिन दिखेगा कैसे, जहाँ ऐसी सब गलतियाँ होती हों, वहाँ!

**प्रश्नकर्ता :** जब खुद को पता चलता है कि ये सब गलतियाँ हुई हैं, उसके बाद दिखाई देगा न?

**दादाश्री :** नहीं! सब से पहले तो उसे उसकी समझ ही नहीं आई है न तो जब तक उसे समझ में नहीं आएगा तब तक दिखाई कैसे देगा? ये क्या कहना चाहते हैं, वह बात ही समझ में नहीं आई न? उसके लिए उदाहरण देता हूँ, बैलगाड़ी का उदाहरण देता हूँ, मिकेनिकल का उदाहरण देता हूँ लेकिन एक भी बात अंदर तक नहीं पहुँचती है न! तो अब क्या करें!

**प्रश्नकर्ता :** फिल्म की तरह दिखाई देना चाहिए न?

**दादाश्री :** लेकिन दिखेगा कैसे? आप देखने वाले नहीं हो। गाड़ी के मालिक नहीं हो न? मालिक होते तो दिखाई देता न। अभी तो आप बैल के कहे अनुसार चलते हो। जो बैल के कहे अनुसार चलता है उसे कोई फिल्म नहीं दिखाई देती। जो खुद के निश्चय से चले उसे सबकुछ दिखाई देता है। क्या इन सभी को फिल्म नहीं दिखाई देती? नहीं, दिखाई देती न!

**प्रश्नकर्ता :** सामायिक करने में इन्टरेस्ट नहीं है इसलिए ऐसा होता है न?

**दादाश्री :** इन्टरेस्ट नहीं हो उसे चला सकते हैं लेकिन इसे नहीं चला सकते। इसके

जैसी मूर्खता कोई करता होगा? क्या देख कर ऐसा करता होगा?

**प्रश्नकर्ता :** मैं ऐसा करता हूँ उसका अभी पता नहीं चलता, समझ में नहीं आता।

**दादाश्री :** समझ में ही नहीं आता न, क्यों? कब समझ में आएगा? दो-तीन जन्मों के बाद समझ में आएगा? शादी कर लेगा तो (पत्नी) समझा देगी। कहता है 'समझ में ही नहीं आता!'

यह बैलगाड़ी का उदाहरण दिया, फिर निश्चय बल की बात की। जो अपने निश्चय के अनुसार नहीं करने दे, उसकी बात माननी चाहिए क्या? माँ-बाप की नहीं मानते और मन की कीमत ज़्यादा मानते हो, ऐसा हुआ न?

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन मुझे सामायिक में कुछ दिखाई ही नहीं देता।

**दादाश्री :** क्या देखना है कि दिखाई देगा?

**प्रश्नकर्ता :** आप कहते हैं न कि पिछले चार सालों तक का सबकुछ दिखाई देता है।

**दादाश्री :** वह इस तरह से नहीं दिखाई देता। वह तो जब गहराई में उतरने का कहते हैं, तब दिखाई देता है। जो मन के कहे अनुसार चलते हैं वे सभी बैलगाड़ी जैसे ही हैं न? फिर दिखेगा ही कैसे? 'देखने वाला' अलग होना चाहिए, खुद के निश्चयबल वाला! अभी तक मन का कहा ही किया है, उसी वजह से यह सारा आवरण आ गया है।

**प्रश्नकर्ता :** सामायिक करते समय मन सामायिक करने के लिए मना करे तो वहाँ पर उदयकर्म है क्या?

**दादाश्री :** उदयकर्म तो कब कहलाता है

कि निश्चय होने के बावजूद निश्चय को टिकने न दे, तब उदयकर्म कहलाता है।

**प्रश्नकर्ता :** विचार उदयकर्म के अधीन तो नहीं फूटते हैं न?

**दादाश्री :** लेकिन अगर अपना निश्चय हो तो सामायिक करना। अगर निश्चय हो तो, भीतर प्रकृति को अनुकूल नहीं आए फिर भी करना चाहिए। बाकी, विचार तो उदयकर्म के अधीन होते हैं। उन्हें हमें देखना हैं। वह हमारे पुरुषार्थ की बात है। विचारों को देखें तो वह उदयकर्म वहीं पर खत्म हो जाएगा। देखा तो खत्म! उसमें विचरे तो उदयकर्म शुरू हो जाएगा!

### ध्येय के अनुसार चलाओ, मन को

यह तो 'मन के चलाने' से चलते हो, खुद के विल पावर (आत्मबल) से नहीं चले। वहाँ पर 'यह पसंद नहीं और यह पसंद है,' वे उसके साधन, वे रोंग कहलाते हैं। सैद्धांतिक होना चाहिए, लेकिन अब क्या हो सकता है? अगर उसमें काम करते समय सैद्धांतिक हो जाए, तो हो जाएगा।

**प्रश्नकर्ता :** हो जाएगा।

**दादाश्री :** देखो न, अभी से ही नहीं हो रहे।

**प्रश्नकर्ता :** वह तो हो जाएगा।

**दादाश्री :** हो जाएगा, वैसी आशा तो रखनी ही चाहिए न? अभी भी छोटी-छोटी बातों में, ऐसा निश्चित किया है कि मन का नहीं मानना है अर्थात् जितना काम का हो उतना सुनना है और जो काम का नहीं हो वह नहीं। यदि गाड़ी अपने तय किए रास्ते पर जा रही हो तो, हमें उसे चलने देना है और यदि फिर दूसरी ओर जा रही हो तो उसे अपने ध्येय के अनुसार चलाना है। हर बात में ऐसा करना है। यह तो कहता है, 'वह

इधर दौड़ रही है, तो अब मैं क्या करूँ? उस बैलगाड़ी वाले को क्या कोई घर में घुसने देगा?

**प्रश्नकर्ता :** नहीं लेकिन अंदर जो पसंद है, वह चीज़ नहीं करनी चाहिए?

**दादाश्री :** किसे पसंद है, वह करना है? क्या मैं नाश्ता नहीं करता? लेकिन उसे ऐसा रखना है कि 'नापसंद है'।

**प्रश्नकर्ता :** हम तो सुबह उठ कर ऐसा ही तय करते हैं कि आपके पास आना है। अन्य कोई निश्चय नहीं है। कुछ बातों में मन कहता है वैसा मानते हैं। व्यवहार में जो मान्य हो वैसा।

**दादाश्री :** अपने कहे अनुसार चलना। हमें ज़रूरत हो, हमारा ध्येय हो, उस अनुसार चलना है। अगर हम बोरसद जाने निकलें और फिर आधे मील ही चले हो, फिर मुझे कहेगा, कि 'आज रहने दो न,' तो फिर यह वापस लौटने का देखेगा। तो वहाँ से वापस नहीं लौटना है। लोग भी क्या कहेंगे बेअक्ल हो या क्या हो? जा कर वापस आ गए? आपका तो कोई ठिकाना ही नहीं है क्या? ऐसा कहेंगे या नहीं कहेंगे लोग?

**प्रश्नकर्ता :** कहेंगे।

**दादाश्री :** मोक्ष में जाने का निश्चय है क्या तेरा?

**प्रश्नकर्ता :** मोक्ष में जाने का निश्चय तो बहुत है।

**दादाश्री :** अगर उसमें कोई अड़चन आए तो?

**प्रश्नकर्ता :** तो भी निश्चय नहीं डिगोगा।

**दादाश्री :** अगर मन भीतर शोर मचाए तो?

**प्रश्नकर्ता :** तो भी निश्चय नहीं डिगोगा।

**दादाश्री :** उसी को मनुष्य कहते हैं। इन पिल्लों का (डगमगाते निश्चय वालों को) क्या करना है? तुझे ये सब बातें समझ में आती हैं?

**प्रश्नकर्ता :** थोड़ी बहुत समझ में आती हैं। मुझे तो ऐसा ही लगता है कि मेरा निश्चय है।

**दादाश्री :** कैसा निश्चय? जो मन के कहे अनुसार चलता है वैसा! क्या निश्चय वालों का मन ऐसा रहता होगा? मन रहता है लेकिन हेल्पिंग रहता है। सिर्फ खुद की जरूरत के लिए ही, जैसे बैल खुद के मालिक के कहे अनुसार चलते हैं न! लेकिन हमें इधर जाना हो और वे उधर जाए तो?

**मन में मत फँसना, भले ही वह शोर मचाए**

**प्रश्नकर्ता :** अगर मन को इन्टरेस्ट नहीं आए तो वह आनाकानी करेगा न?

**दादाश्री :** भले ही वह आनाकानी करे! सभी का मन ऐसे आनाकानी करता है। मन तो आनाकानी करेगा। वह तो टाइम हो जाए इसलिए आनाकानी करता है। वह आनाकानी करे इसका मतलब क्या वह दावा करेगा? कुछ देर बाद फिर कुछ भी नहीं। उसका समय बीत जाने पर फिर दिनभर आनाकानी नहीं करेगा। अगर तू उसमें फँस गया तो फँस गया। वर्ना अगर नहीं फँसा तो कुछ भी नहीं। तू स्ट्रॉंग रहता है न?

**प्रश्नकर्ता :** कभी-कभी स्ट्रॉंग रहता हूँ।

**दादाश्री :** तेरा मन तो क्या कहेगा, 'पढ़ाई भी पूरी नहीं करनी है।' वह ऐसा कहे तो क्या वैसा करेगा?

**प्रश्नकर्ता :** दादा कहेंगे, वैसा करूँगा।

**दादाश्री :** हम क्या तेरा अहित करेंगे? आप भले ही अपना अहित करो लेकिन हमसे

नहीं होगा न! आप हमारे टच (संपर्क) में आए हों तो हम आपके हित के लिए ही सभी दवाईयाँ दे देते हैं इसके बावजूद भी अगर मन नहीं सुधरे तो फिर वह उसका हिसाब है। सभी प्रकार की दवाईयाँ दे देते हैं और दवाईयाँ तो ऐसी देते हैं कि सभी रोग मिट जाएँ इसके बावजूद भी यदि खुद टेढ़ा है तो पीएगा ही नहीं न!

**प्रश्नकर्ता :** नाक दबाकर पिला देना।

**दादाश्री :** नाक कौन दबाएगा? ऐसे नाक दबाने से कुछ नहीं होता।

तू नहीं कह रहा था कि मुझे स्कूल जाना अच्छा नहीं लगता था। निश्चय तो होना चाहिए न कि मुझे स्कूल की पढ़ाई पूरी करनी है। फिर यह करना है, वह करना है। फिर हमेशा सभी के साथ रहना है, ब्रह्मचर्य का पालन करना है, अपनी योजना ऐसी होनी चाहिए। यों योजना के बगैर जीवन जीने का क्या अर्थ है?

**प्रश्नकर्ता :** कॉलेज जाना तो मुझे भी पसंद नहीं है।

**दादाश्री :** कॉलेज में जाना ही पड़ेगा न! सभी के मन का समाधान तो करना ही चाहिए न! फादर या मदर, उनके मन का समाधान करके मोक्ष में जाना है। नहीं तो, तू मोक्ष में कैसे जा पाएगा? इस तरह हंगामा करके घर से भाग गए तो हो जाएगा क्या? तो क्या मोक्ष हो जाएगा? अतः तिरस्कार नहीं करना चाहिए।

**निश्चय ही पुरुषार्थ है**

**दादाश्री :** ब्रह्मचर्य का कोर्स पूरा करेगा क्या?

**प्रश्नकर्ता :** पक्का! वह (अब्रह्मचर्य) तो चाहिए ही नहीं। ब्रह्मचर्य का निश्चय रहता है

लेकिन पुरुषार्थ में कमी रह जाती है तो उसके लिए क्या करना चाहिए?

**दादाश्री :** वह कमी पुरुषार्थ में नहीं है। निश्चय ही पुरुषार्थ है।

**प्रश्नकर्ता :** अगर निश्चय हो तो फिर वह चीज रहेगी ही।

**दादाश्री :** वह कमी डिस्चार्ज में है। जो कमी है, वह डिस्चार्ज में है, चार्ज में नहीं है। वह जो डिस्चार्ज में है, उसकी कोई कीमत नहीं है।

**प्रश्नकर्ता :** विषय के बारे में तो पहले से ही स्ट्रॉंग रखा हुआ है और अभी भी उस बारे में ज़रा ज्यादा जागृति रखी हुई है अंत तक लेकिन संसार में ये जो बाकी जो बातें होती हैं न...

**दादाश्री :** उनका कुछ नहीं, उनकी कीमत ही नहीं है। कीमत इसी की है, ब्रह्मचर्य की। अन्य सभी मनुष्यों की देह में पशु (जैसे) हैं! पशुता का दोष है। अन्य चीजों की कीमत ही नहीं है।

**प्रश्नकर्ता :** बाकी, विषय के बारे में तो यहाँ तक पक्का है कि अब यदि ऐसा कुछ हुआ तो चंदूभाई (फाइल नं-वन) को खत्म कर दूँगा, (कुछ भी हो) लेकिन अब यह (विषय) तो चाहिए ही नहीं।

**दादाश्री :** तो फिर आपका ब्रह्मचर्य अच्छा कहा जाएगा। ऐसी समझ होनी चाहिए। बाकी, हैवानियत हो, वह तो रुकेगा ही नहीं न!

**अगर मन विरोधी हो जाएगा तो डूबा देगा**

**प्रश्नकर्ता :** इस ब्रह्मचर्य के बारे में कर्म का सिद्धांत ऐसा है क्या?

**दादाश्री :** सिर्फ ब्रह्मचर्य के लिए ही आप निभा सकते हो। अगर किसी ने तय किया

हो कि शादी नहीं करनी है तो निभा सकता है। अपना ज्ञान ऐसा है इसलिए निभाया जा सकता है लेकिन दूसरे कर्म तो छोड़ेंगे ही नहीं न!

**प्रश्नकर्ता :** यह शादी का कर्म हमारे पीछे नहीं पड़ेगा?

**दादाश्री :** अगर बहुत गाढ़ हो तो पीछे पड़ेगा और यदि वह गाढ़ होगा तो हमें पहले से ही पता चल जाएगा। उसकी गंध आ जाती है। वह ज्ञान से ठीक हो जाता है। अपना यह ज्ञान ऐसा है कि उस कर्म को खत्म कर सकता है लेकिन ये दूसरे कर्म तो खत्म नहीं हो सकते न!

यह तो, जैसे छोटे-छोटे बच्चों ने तय किया हो न कि 'हमें शादी नहीं करनी है,' वैसी बातें हैं। कितने तो समझे बगैर हाँकते रहते हैं! अगर 'व्यवस्थित' में हो और शादी नहीं करेंगे तो हमें हर्ज नहीं है लेकिन 'व्यवस्थित' में नहीं हो और बाद में बड़ी उम्र में शोर मचाए, कि मैं शादी किए बगैर रह गया तो कौन कन्या देगा? वह ब्रह्मचर्य का पालन कर सकता है क्योंकि वह मन का मानता ही नहीं है, बिल्कुल भी नहीं न! मन का कुछ नहीं मानना चाहिए। अपना अभिप्राय ही रखना, अगर मन का ज़रा सा भी माना तो फिर अगली बार वापस चढ़ बैठेगा।

**प्रश्नकर्ता :** मेरा मन ऐसा सब बताता है कि सत्संग में बैठना है, दादा के पास जाना है।

**दादाश्री :** मेरा कहना है कि यदि मन अपने अभिप्राय के अनुसार चले तो हमें एक्सेप्ट है। मन उसी अभिप्राय वाला हो जाए तो अच्छा है लेकिन जब मन विरोध करेगा, उस समय तुझे डूबा देगा।

**नहीं चलेगा, वेवरिंग माइन्ड इसमें**

**प्रश्नकर्ता :** अपने विज्ञान में पिछले

अभिप्रायों से जो मन उत्पन्न हुआ है, उसे देखना है, उसमें एकाकार नहीं होना है न?

**दादाश्री :** देखे तब तो फिर काम ही हो गया न! देखा तो फिर कुछ रहा ही नहीं न। यह चीज़ तो, जो देखते नहीं हैं, उनके लिए हैं। वे तो खुद के अनुसार चलते हैं और फिर बात को पकड़ कर रखते हैं। चलते हैं उसमें भी हर्ज नहीं है लेकिन बात को पकड़ते हैं उसमें हर्ज है।

अंदर से मन क्या कहता है? 'यह खाओ न!' हम कहते हैं कि भाई, इसे नहीं खाना है। आपका शोर मचाना बेकार है। हम अपने आज के ज्ञान के आधार पर चलते हैं। आज के अभिप्राय से चलते हैं।' पिछला ज्ञान कहता है, 'खाओ न!'

हमारा आज का ज्ञान ब्रह्मचर्य पालन का है और पिछले जन्म का ज्ञान ब्रह्मचर्य पालन के लिए 'हाँ' कहे। छः महीने बाद फिर वापस नया ही कहता है कि 'शादी करनी चाहिए।' इस तरह मन की स्थिति हमेशा एक जैसी नहीं रहती। डाँवाडोल होती रहती है, विरोधाभास वाली होती है।

**प्रश्नकर्ता :** छः महीने बाद मन शादी करने को कहता है। विभिन्न प्रकार का बताता है। कुछ समय अगर ज्ञान में ही बीते तो फिर मन लगातार एक जैसा ही कहने लगेगा न? फिर उल्टा-सीधा बताना बंद नहीं कर देगा?

**दादाश्री :** नहीं, ऐसा नहीं होगा। बूढ़ापे में भी शादी करने को कहता है न! खुद मन से कहता भी है, 'यह उम्र हो गई, चुपचाप बैठ!' यानी मन का कोई ठिकाना नहीं है, ऐसा समझ कर मन के साथ एकाकार मत होना। अपने अभिप्राय से मेल खाए, उतना मन एक्सेप्टेड (स्वीकार्य)।

**निश्चय, ज्ञान के आधार पर या मन के?**

**प्रश्नकर्ता :** मन के आधार पर किए गए निश्चय और ज्ञान से किए गए निश्चय का डिमार्केशन (अंतर) कैसे किया जा सकता है?

**दादाश्री :** ज्ञान से किए गए निश्चय तो बहुत सुंदर होते हैं। वह तो बहुत अलग चीज़ है। मन के साथ कैसे बरताव करना, वह सारी समझ तो होती ही है। उसे पूछना नहीं पड़ता है कि मुझे क्या करना चाहिए! ज्ञान से किए गए निश्चय की तो बात ही अलग न! आपका तो यह मन से किया हुआ है न! इसलिए आपको समझ लेना चाहिए कि यह कभी भी चढ़ बैठेगा। वापस मन ही चढ़ बैठेगा। जिस मन ने इस ट्रेन में बैठाया वही मन ट्रेन में से गिरा देगा। अतः यदि ज्ञान से बैठे होंगे, तो नहीं गिराएगा।

**प्रश्नकर्ता :** अभी तक जो मन से किया गया निश्चय है, वह ज्ञान से हो जाए उसके लिए क्या करना चाहिए?

**दादाश्री :** अब आपको उसे ज्ञान से फिट कर देना चाहिए। अर्थात् पतंग की डोर अपने हाथ में आ जानी चाहिए। ब्रह्मचर्य की डोर अपने हाथ में आ जानी चाहिए फिर मन भले ही कितना भी शोर मचाए फिर भी उसका कुछ नहीं चलेगा। दो-पाँच साल तक तू विरोध करेगा और वह कहेगा, 'शादी कर, शादी कर' और सभी संयोग विपरीत हो जाएँ फिर भी हम हिलेंगे नहीं क्योंकि आत्मा सभी से अलग है। सभी संयोग वियोगी स्वभाव के हैं।

**प्रश्नकर्ता :** अगर निश्चय ज्ञान से किया गया हो, तब तो उसका मन इस तरह से विरोध करेगा ही नहीं न?

**दादाश्री :** नहीं! नहीं करेगा। अगर ज्ञान

से किया गया निश्चय हो, तब तो उसकी नींव (फाउन्डेशन) ही अलग तरह की होगी न! उसकी फाउन्डेशन पूरी आर. सी. सी. की होगी जबकि यह तो (मन का निश्चय) ईंट और अंदर कोन्क्रीट से बना हुआ है। फिर दरार पड़ ही जाएगी न?

### निर्बलता के कारण मन के वश में

तू तेरे मन के कहे अनुसार कितना चलता है?

**प्रश्नकर्ता :** कई बार जाना पड़ता है।

**दादाश्री :** और किसके आधार पर चलता है तू?

**प्रश्नकर्ता :** जब मन के विरुद्ध और कोई ज्ञान खड़ा हो जाता है कि 'यह गलत है, ऐसा नहीं होना चाहिए, ऐसा नहीं करना चाहिए,' तो फिर कभी-कभी ज्ञान का फॉर्स जीत जाता है और अगर चूक गए तो मन का फॉर्स जीत जाता है।

**दादाश्री :** यानी कि जो पक्ष जीते वही ले जाता है। वॉलीबॉल जैसा!

बारह महीनों के बाद तेरे मन में रोज़ ऐसा आए, मन ऐसा कहे कि 'शादी कर, शादी कर, शादी कर। शादी कर लेनी चाहिए, शादी कर लेनी चाहिए!' अगर ऐसा निकले तो तू क्या करेगा?

**प्रश्नकर्ता :** उस बारे में जो भी विचार आए, उसे उखाड़ कर फेंक देना है।

**दादाश्री :** लेकिन छः महीनों तक तू इतना पुरुषार्थ करेगा? अगर छः महीनों तक मन आपको परेशान करता रहे तो आपकी बिसात नहीं है और मन में से तो ऐसा निकल सकता है! अभी मन आपकी इच्छानुसार चल रहा है। आप कहते हो, 'नहीं,' तो कहता है, 'नहीं।' जब ऐसा निकलेगा न, तब सास-बहू जैसा निकलेगा, तब

'आ जा,' कहेगा इसलिए सावधान रहना चाहिए! मैं आपको डिस्करेज करने के लिए नहीं कह रहा हूँ। हर प्रकार से मन का विरोध करो। जिधर मन चले, उसी दिशा में शरीर जाए तो इंसान खत्म हो जाता है। इसी तरह पूरा जगत् खत्म हो गया है।

**प्रश्नकर्ता :** मन के कहे अनुसार चलने का, कारण क्या है?

**दादाश्री :** खुद की निर्बलता। अनंत जन्मों से निर्बलता घुस गई है, वह निकलती नहीं है। अब इस तरह का खुद का अहम् (अहंकार) नहीं है, सिर्फ निर्बलता ही है। मन के कहे अनुसार चल ही कैसे सकते हैं? एक अक्षर भी मन का नहीं मानना। कहना 'चले जाओ' और दूसरा कुछ नहीं। मन में आएगा जरूर लेकिन उसकी सुनता नहीं। एक अक्षर भी नहीं सुनता।

### अपरिचय से मन का छुटकारा

मन का स्वभाव कैसा है? अगर एक बार उस चीज़ से दूर रहे न, बारह महीनों या दो साल तक दूर रहे तो, फिर उस चीज़ को भूल ही जाता है। दूर रहा कि भूल जाता है। पास में गया तो फिर परेशान करता रहता है। मन का परिचय छूट जाए, 'हम' अलग रहें, मन भी उस चीज़ से दूर रहा तो फिर हमेशा के लिए भूल जाएगा। उसे याद भी नहीं आएगा फिर कहने पर भी उस तरफ नहीं जाएगा। ऐसा आपको समझ में आता है क्या? तू तेरे दोस्त से दो साल तक दूर रहेगा तो फिर तेरा मन उसे भूल जाएगा। मन का ऐसा स्वभाव है कि महीने दो महीने तक किच-किच करता रहेगा, और अपना ज्ञान तो मन की सुनता ही नहीं न!

### मन का मानेंगे तो चूक जाएँगे उपयोग

पूरा जगत् मन के कहे अनुसार चलता है।



मन ऐसा कहे तो ऐसा। तूने मन से अलग रहने का प्रयत्न किया क्या? यह किसने उकसाया है? मन ने ही।

**प्रश्नकर्ता :** आपने कहा कि वृत्तियों को उपयोग में रखना चाहिए लेकिन अभी तो बाकी सभी जगहों पर जाती हैं।

**दादाश्री :** जाए उसमें कोई हर्ज नहीं है, लेकिन मन जो दिखाए उसकी नहीं मानना, वही उपयोग कहलाता है और अगर मन का माना तो वह उपयोग चूक गया। आपको सिखाया था फिर भी वापस वहीं के वहीं चला जाता है। मन के कहे अनुसार चले इसलिए जहाँ परेशानी नहीं थी वहाँ फिर परेशानी शुरू हो गई।

हमारी उपस्थिति में मन स्थिर हो जाता है।

**उछलकूद करने वाले मन को गेट आउट करेंगे**

**प्रश्नकर्ता :** आपने कहा कि अगर मन बहुत उछलकूद करे तो उस पर पट्टा बाँध देना चाहिए वह कैसे?

**दादाश्री :** वह उनके लिए हैं, जिन्होंने ज्ञान नहीं लिया है। ज्ञान लिया है, उन्हें तो सिर्फ देखते रहना है। जिन्होंने ज्ञान नहीं लिया है, उन्हें उसे वापस लाना पड़ेगा। मन को उसकी पसंद का दे दें तो वह पहले पकड़ी हुई चीजें छोड़ देगा। अगर उसे एक टोकरी खानी हो तो उसके सामने दूसरी टोकरी रख दें ताकि वह इसमें से खाने लगे, पहले वाली को छोड़ देगा।

**प्रश्नकर्ता :** मन को वापस मोड़ने के लिए क्या करना चाहिए?

**दादाश्री :** मन को वापस मोड़ने के लिए जान लेना चाहिए कि उसे क्या पसंद है। उसकी

वे आदतें हमें जान लेनी चाहिए। उसकी क्या-क्या बुरी आदतें हैं, वे हमें जान लेनी चाहिए हाँ, अगर उसे प्याज़ के पकोड़े खाने की आदत हो तो खिला देना और उससे कहना कि अगर तू बुरी आदतों को छोड़ देगा तो तुझे प्याज़ के पकोड़े खिला दूँ। तो वह वापस लौट जाएगा।

**प्रश्नकर्ता :** और फिर भी वापस नहीं लौटे तो?

**दादाश्री :** नहीं लौटे तो मन की सुननी ही नहीं। मन चेतन नहीं है, वह नपुंसक है और हम चेतन हैं। नपुंसक चेतन का क्या बिगाड़ लेगा? कहना, 'दादा की आज्ञा से कह रहा हूँ, गेट आउट!' तो वह चुप हो जाएगा।

**जागृति, मन के सामने...**

मन की बात तो सुननी ही नहीं चाहिए। बहुत जोखिम है। यह घबराहट और सफोकेशन क्यों हुआ? क्योंकि मन की बात सुनी। जो ज्ञेय था उसकी बात सुनी। मन की ही बात सुनते रहेंगे तो फिर उलझ जाएँगे न।

आपको ऐसा पता चलता है क्या कि यहाँ बिगड़ गया?

**प्रश्नकर्ता :** जब मन का सुन लेते हैं तो पता चल जाता है। फिर उसका ज़ोर नहीं चलता है।

**दादाश्री :** पता चल जाए तो, वह लेवल (दशा) कहलाता है। फिसलने के बाद भी (जागृति) नहीं आए तो उसका क्या करें?

मन का सुनते ही तन्मयाकार हो जाता है। पहले तो तन्मयाकार ही रहता था। वह आदत अभी भी गई नहीं है न! पहले तन्मयाकार हो कर ही करता था और कोई अवलंबन था ही नहीं न! ज्ञान रूपी अवलंबन नहीं था न! अब तो

अवलंबन मिल गया है इसलिए कहा कि 'उसका कुछ सुनना मत, वह तो ज्ञेय है'।

**प्रश्नकर्ता :** मन के साथ तन्मयाकार नहीं रहने में बातचीत का प्रयोग बहुत हेल्प करता है।

**दादाश्री :** लेकिन वह तो, जब बहुत जागृति रहे तब ऐसा हो सकता है न! जगत् अभानता में है। कुछ भान वगैरह नहीं है, राम तेरी माया! थोड़ी जागृति जरूर है लेकिन भान नहीं है इसलिए मार खाते रहते हैं अगर ये पौद्गलिक लालच न रहें तो अलग रह सकता है।

**प्रश्नकर्ता :** आपने जागृति और लालच, ये दो चीजें कही हैं न।

**दादाश्री :** मन लालची ही है।

**करो निश्चय, डिगे नहीं ऐसा**

**प्रश्नकर्ता :** अब फाइनली, मैं मन के कहे अनुसार चलता हूँ तो उससे छूटने के लिए क्या करूँ?

**दादाश्री :** करने का क्या है वहाँ?

**प्रश्नकर्ता :** कुछ स्टेप तो लेने पड़ेंगे न?

**दादाश्री :** किस चीज़ के स्टेप लेने हैं? वही तो समझना है। समझ कर उसे गलत ठहरा देना है। अपना जो अनिश्चय है, उसे गलत मान कर निश्चय को स्वीकार कर लेना है।

**प्रश्नकर्ता :** अर्थात् मन के कहे अनुसार नहीं चलना है। ऐसी शुरुआत ही कर देनी है कि मन बताएँ वैसे 'नहीं चलना' है।

**दादाश्री :** उसे फेल ही कर देना। उस पूरे भाग को ही खत्म कर देना है, जो हमें अपने ध्येय से विचलित करे, उसमें करना क्या

है? सिर्फ निश्चय। जो डिगे नहीं वैसे निश्चय किया है या नहीं किया?

**प्रश्नकर्ता :** डिगे नहीं, ऐसा ही निश्चय किया है।

**दादाश्री :** सौ प्रतिशत न डिगे, ऐसा?

**प्रश्नकर्ता :** ऐसा ही लगता है।

**दादाश्री :** थोड़े कच्चे हो आप लेकिन उसके बावजूद भी हम कहते हैं कि अभी भी अगर मन सही चीज़ के लिए उछलकूद कर रहा हो तो कर!' हम लेट गो करते हैं कि भाई, यह सही चीज़ है। ये गाने वगैरह सुनना, यह कोई सही चीज़ नहीं है। यह खाना, वह सही चीज़ है। तो उसे हम लेट गो करते हैं। नींद सही चीज़ है, तो उसे हम लेट गो करेंगे कि चार घंटों तक सो जाना या पाँच-छः घंटे सो जाना। परंतु पतंग उड़ाना जरूरी है क्या? कितने ही ऐसे लोग कि जिन्होंने ज्ञान नहीं लिया है, वे भी कहते हैं कि इसकी क्या जरूरत है? यह तो बेकार की अनावश्यक पीड़ा है! ज्ञान नहीं लिया हो, उनमें भी ऐसे कहने वाले होंगे या नहीं होंगे?

**प्रश्नकर्ता :** होंगे न।

**दादाश्री :** मन के कहे अनुसार चलना मिकेनिकल कहलाता है। ये जो बुद्धिजीवी हैं वे मन के कहे अनुसार नहीं चलते, बुद्धि के कहे अनुसार चलते हैं लेकिन वह भी गलत है। अंत में वह बुद्धू बनाती है।

पुरुष बनने के बाद, पुरुष और प्रकृति दोनों के अलग हो जाने के बाद, अगर निश्चय नहीं हो तो फिर वह किस काम का? और मन तो 'रिलेटिव' में गया, उसे तो स्वीकार ही नहीं करना है न!

## अब तन्मयाकार नहीं होना

मन का कुछ भी नहीं मानना है। मन ज्ञेय है और हम ज्ञाता। ज्ञेय-ज्ञाता का संबंध का अर्थ क्या है। उसे देखना है। उछलकूद कर रहा हो, अच्छे विचार कर रहा हो या बुरे उसे हमें देखते रहना है यानी आपको उसमें तन्मयाकार नहीं होना है। अज्ञान दशा में तन्मयाकार हो जाते थे, अब तन्मयाकार नहीं होना है। इस ज्ञान की मुख्य चीज़ यही है कि इसमें वह कमजोर नहीं पड़ जाना चाहिए। यह विज्ञान है न? इसमें भूल-चूक नहीं होनी चाहिए। खास तौर पर ऐसा करना कि मन से गलती नहीं हो, बाकी जो कुछ भी हुआ होगा तो, उसे वापस सुधार दूँगा।

वैसे तो तुझे मनको डाँटना चाहिए। मन को डाँटता है क्या? सुबह से कुछ कहता है? दो-चार बार डाँटता है क्या?

**प्रश्नकर्ता :** जब उल्टा विचार आता है तब तुरंत ही कहता हूँ कि 'यह ठीक नहीं है लेकिन डाँटता नहीं हूँ।'

**दादाश्री :** दो-चार बार डाँट-फटकार करनी चाहिए। कंधा भी थपथपाना चाहिए कि 'हम हैं न आपके साथ।' अभी तो उम्र कम है, सब राह पर आ जाएगा। बाद में तो मुश्किल लगेगा।

**प्रश्नकर्ता :** मन के साथ बातचीत करने का प्रयोग, कैसे करना चाहिए?

**दादाश्री :** वह तो जब आप दर्पण में देख कर बात करोगे न तो हो पाएगी! मन से कहना, 'हम तुझ में दखल नहीं देंगे, तू हम में दखल मत देना।' फिर कभी मन कहेगा, 'मुझ में क्यों दखल दे रहे हो?' तब आप कहना, 'अब हम तेरी बात में दखल नहीं देंगे और तू हमारे काम में दखल मत देना।' ये सारे तो

कितने भागीदारों के तूफान हैं लेकिन शुद्धात्मा और पाँच वाक्य (आज्ञाएँ), हाथ में आ गए तो बस हो गया!

## मन को टैकल करना सीख कर, लाओ हल

मन का तो हमें कुछ भी मानना ही नहीं है। अगर शरीर मन के कहे अनुसार चलेगा तो फिर अंदर से लुट जाएगा। हमें उस रास्ते पर नहीं जाना है जबकि पूरी दुनिया उसी पर चल रही है, मन के कहे अनुसार चल रही हैं और यह मोक्षमार्ग अर्थात् दादा की आज्ञा के अनुसार चलना है।

सत्संग में अगर हम मन को खुराक नहीं देंगे तो वह हमें खा जाएगा। उसे खुराक देनी ही पड़ेगी। संसार व्यवहार में तो खुराक हमें ऐसे ही मिलती रहती है। सामने वाला कुछ बोले उससे पहले तो पलट कर हम दे देते हैं। इस तरह से मन को खुराक मिलती रहती है। सत्संग में कौन सी खुराक मिलती है? इसमें तो पलट कर देना नहीं रहता न! उसके लिए मन को क्या खुराक देनी चाहिए कि 'जगत् का कल्याण हो, उस कल्याण में निमित्त बनूँ।' इस तरह मन को काम दोगे न तो मन अपना काम करता रहेगा। उसे एक काम दे देना और जगत् कल्याण ही अपना काम है!

मन के साथ थोड़ी बहुत बातचीत की जाए तो मन का दूसरा सब काम बंद हो जाता है तब आत्मा स्थिर हो जाता है। फिर जो पढ़ना हो वह पढ़ता भी है। वह पढ़ता है तो उसे आत्मा का उपयोग कहा जाता है और जब स्थिर होता है, उसे भी आत्मा का उपयोग कहा जाता है इसलिए दिनभर अंदर बुलवाते रहना (मन के साथ बातचीत करना) और मन को (जगत् कल्याण के) काम सौंपते ही रहना। यदि वह अन्य कोई खुराक खाने नहीं जाए तो समझो

वह वीतराग हो गया। वह कोई दूसरी खुराक खाने लगे, तब अगर हम कोई काम सौंप देंगे न तो दोनों में विरोधाभास हो जाएगा, तब सबकुछ खत्म हो जाएगा। वाणी में अलग बोलता है और मन कुछ और ही सोचता है। वाणी बोलते समय मन, विचार और सब खत्म हो जाते हैं। फिर किसी जन्म में ऐसा मौका नहीं मिलेगा इसीलिए काम निकाल लो।

### इसी जन्म में पूर्ण कर लेना

**प्रश्नकर्ता :** दादा, अब अंदर ब्रह्मचर्य के लिए निश्चय हो ही गया है।

**दादाश्री :** तेरा निश्चय हो ही गया है। चेहरे पर नूर आ गया है न!

**प्रश्नकर्ता :** अगर ज्ञान में थोड़ी कमी रह जाए न तो उसमें हर्ज नहीं है लेकिन ब्रह्मचर्य का तो एकदम परफेक्ट (पक्का) कर लेना है। अर्थात् कम्प्लीट (संपूर्ण) निर्मूल ही कर लेना है। फिर अगले जन्म की ज़िम्मेदारी नहीं रहेगी।

**दादाश्री :** बस, बस।

**प्रश्नकर्ता :** अभी दादा मिले हैं तो पूर्ण ही कर लेना है।

**दादाश्री :** पूर्ण ही कर लेना है। वह निश्चय डिगे नहीं ऐसा रखना है। विषय का संयोग नहीं होना चाहिए। आपका बाकी कुछ होगा उसे लेट गो कर लूँगा। इसके अलावा पाँच-सात-दस प्रकार की गलतियाँ, (दृष्टि दोष, विचार दोष) होती है, उनकी सभी तरह की दवाईयाँ बता दूँगा। उनकी दवाई हैं। मेरे पास सभी प्रकार की दवाईयाँ हैं लेकिन इसकी (आचार दोष हुआ तो) दवाई नहीं है। नौ हजार मील चला और वहाँ पर नहीं मिला तो वापस लौट

गया। अब नौ हजार पाँच सौ मील पर 'वह' था, वापस लौटने की मेहनत की, उसके बजाय आगे चल न भाई!

### जगत् कल्याण रूपी खुराक दो, मन को

**प्रश्नकर्ता :** आपने जगत् कल्याण की बात की, मन से कहें कि जगत् कल्याण करना है तो उसमें उसे जल्दबाज़ी तो रहेगी न?

**दादाश्री :** उसमें असल मज़ा आएगा। उसका दायरा बहुत बड़ा है। उसका पूरा सर्कल बहुत बड़ा है। हम ने अपने मन को इसी में लगा रखा है। वह रात-दिन अपने आप कोना ढूँढता ही रहता है कि इस फँलाने भाई को ज्ञान दे दें, इस फँलाने भाई को ऐसा कर दें, अपने आप ही ढूँढ लेता है और अपना काम तो होता ही रहता है।

वह स्टेडी (स्थिर) रहे और हमें परेशान न करे, वह जीवित (कार्यरत) रहे, वह आनंद में रहे और हमें भी आनंद में रखें अब ऐसी ही भावना करनी चाहिए।

खुद का कल्याण का क्या अर्थ है? जगत् का कल्याण ही खुद का कल्याण है इसलिए काम दे दो न! तो उसके लिए यह करेगा, वह करेगा। कोई जा रहा हो तो कहेगा, 'चलिए न, दादा के पास।' फिर मन भी वैसा ही काम करने लगेगा।

हमें मन के कहे अनुसार नहीं चलना चाहिए। अपने ध्येय के अनुसार ही मन को चलाना चाहिए। और यदि ध्येय के अनुसार नहीं चले तो उसे टोकना चाहिए, बस लेकिन यदि वह अपने ध्येय के अनुसार हो तो मन के कहे अनुसार चलने में हर्ज नहीं है लेकिन यदि ध्येय से विरुद्ध होगा तो फँसा देगा, मार देगा। अतः ध्येय के अनुसार होना चाहिए।

## ध्येय के अनुसार मन को बाँधना

**प्रश्नकर्ता :** अगर मन में आने वाले विचार अपने ध्येय के अनुसार हो तो चंदूभाई को उसमें उतरना चाहिए क्या ?

**दादाश्री :** ध्येय के अनुसार हो तो जाने देना और अगर ध्येय के विरुद्ध हो तो जैसे कि आपको जाना है उत्तर में और वह दूसरी तरफ घूम जाए तो आपको उसे पकड़ कर उस तरफ वापस ले जाना है। मन को अपने ध्येय के अनुसार चलाना है। जितना समय मन अपने ध्येय के अनुसार चले उतने समय तक उसका अनुसरण करना।

**प्रश्नकर्ता :** ध्येय के अनुसार हो तब उसे उसी तरफ जाने देना है क्या ?

**दादाश्री :** जाने देना।

**प्रश्नकर्ता :** और अगर ध्येय के विरुद्ध जाने लगे तो उसे मोड़ना है ?

**दादाश्री :** और आत्मा हो कर मन में नहीं घुसना है। देखो न! यह आत्मा हो कर अपने मन में घुस गया है इसीलिए उलझ गया है न!

**प्रश्नकर्ता :** इसका क्या मतलब हुआ ?

**दादाश्री :** नीरस और कुंठित हो जाता है। तुझे देखते रहना है कि मन में कैसे विचार आ रहे हैं, वे अच्छे आएँ या खराब आएँ तुझे बस देखते ही रहना है।

अपना ध्येय निश्चित करना है जिससे फिर मन-बुद्धि-चित्त और अहंकार उसी तरफ जाएँ। अर्थात् मन-बुद्धि-चित्त और अहंकार को ऐसा नहीं कहना कि आप ऐसा करो लेकिन आपको अपना ध्येय ही तय करना चाहिए, 'मुझे आज्ञा का पालन करना है' यदि ऐसा ध्येय निश्चित किया

तो उस तरफ जाएगा और पालन नहीं करना है ऐसा निश्चित किया हो तो फिर उसी तरह चलेगा। फिर तू क्या करेगा ?

**प्रश्नकर्ता :** ध्येय ही निश्चित करना है।

**दादाश्री :** कौन-कौन से ध्येय निश्चित किए हैं ?

**प्रश्नकर्ता :** दादा की आज्ञा में रहना है।

**दादाश्री :** वह तो बहुत बड़ी बात है। 'दादा' की आज्ञा में ही रहना है, जिसका ऐसा ध्येय है न, उसे सब मिल जाएगा इसलिए भगवान ने कहा है न, 'आज्ञा' ही तप और 'आज्ञा' ही धर्म। बाकी कुछ तप करने की ज़रूरत ही क्या है ? खाना-पीना न, आराम से!

## मन के कहे अनुसार चलेगा तो नहीं पहुँच पाएगा ध्येय तक

मन से कहना कि 'ऐसा नहीं चलेगा। हमें तो ध्येय तक पहुँचना है। आपने अभी तक पागलपन किया है। अब नहीं चलेगा।'

अपार (आत्म) सुख का मालिक बनना है, जिसका ऐसा ध्येय है न, उसे देवलोक भी दूर से देखते रहते हैं। अर्थात् हँसना और आटा फाँकना, दोनों काम एक साथ नहीं हो सकते। या तो आटा फाँक या फिर हँस ले।

खुद का मत ही नहीं रखना चाहिए वना स्वच्छंद कहलाएगा। सत्संग में सब जैसा करें वैसा ही करना चाहिए अगर वे मुझ से पूछें कि 'ऐसा हो जाए, तो मुझे क्या करना है,' तो भी ठीक है, तो मैं समझा दूँगा कि ऐसा करना।

तुझे ध्येय तक पहुँचने की इच्छा है क्या ? अगर ध्येय तक पहुँचना हो तो सब बदल देना

तब ध्येय तक पहुँचा जा सकेगा, वर्ना नहीं पहुँचा जा सकेगा।

### ज्ञान से सिद्धांत निश्चित करो

मन अगर आइस्क्रीम माँगता रहे तो आइस्क्रीम माँगे, उसके ब्रह्मचर्य के सिद्धांत को उतना अधिक नुकसान नहीं पहुँचाता इसलिए उसे थोड़ी आइस्क्रीम देना, ज्यादा नहीं। उसे डिस्करेज मत करना। दो मीठी गोलियाँ भी खिला देना और 'नहीं, जाओ।' ऐसे दबाना नहीं चाहिए। सिर्फ जब विषय की बात आए तभी सोच कर काम लेना चाहिए कि 'यह हमारा सिद्धांत है। तुझे सिद्धांत के बीच में नहीं आना है!' जैसे लोग अपनी पत्नी से कहते हैं न कि 'मेरे काम में आपको हाथ नहीं डालना है और हम आपके काम में हाथ नहीं डालेंगे।' इस तरह तय कर लेंगे तो फिर वह हाथ नहीं डालेगा।

**प्रश्नकर्ता :** उसका मतलब क्या होता है ?

**दादाश्री :** वैसा हक़ तो हर एक को है न! आपको समझ में आता है क्या? अभी तो आपका मन आपको इस तरह हेल्प करता है 'शादी नहीं करनी चाहिए, शादी करने में बहुत दुःख है। इस सिद्धांत को बताने वाला वह आपका पूर्वजन्म का मन है। यह सिद्धांत आपने ज्ञान से निश्चित नहीं किया है, यह आपने मन से निश्चित किया है। यह सिद्धांत आपको 'मन' ने बताया है कि 'ऐसा करो'।

**प्रश्नकर्ता :** जैसे ब्रह्मचर्य पालन करने का सिद्धांत मन बताता है, वैसे ही विषय से संबंधित बात भी मन ही बताता है क्या?

**दादाश्री :** जब उसका टाइम आएगा तब फिर छः छः महीनों तक, बारह बारह महीनों तक वह बताता रहेगा।

**प्रश्नकर्ता :** वह भी मन ही है ?

**दादाश्री :** हाँ, जब सभी साइंटिफिक सरकमस्टेशियल एविडेन्स इकट्ठे हो जाएँ, तब। मैं इन सभी से कहता हूँ कि मन के कहे अनुसार क्यों चल रहे हो? मन मार डालेगा।

आपने जो ब्रह्मचर्य का नियम लिया है वह भी मन के कहने से ही लिया है। यह सिद्धांत ज्ञान से निश्चित नहीं किया है। 'मन' ने ऐसा बताया कि 'इसमें क्या मज़ा है? ये लोग शादी करके दुःखी है। ऐसा है, वैसा है'। इस तरह 'मन' ने जो दलीलें दीं उन्हें आपने एक्सेप्ट कर लिया, आपने स्वीकार कर लिया।

**प्रश्नकर्ता :** तो क्या अभी तक ज्ञान से यह सिद्धांत पकड़ में नहीं आया है ?

**दादाश्री :** ज्ञान से कहाँ पकड़ा है? यह सब तो अभी तक मन की दलील पर चल रहा है। अब आपको ज्ञान मिला है तो अब ज्ञान से उन दलीलों को तोड़ दो। उसका वर्चस्व ही बंद कर दो क्योंकि दुनिया में सिर्फ आत्मज्ञान ही ऐसा है जो कि मन को वश में कर सकता है। मन को दबा कर नहीं रखना है, मन को वश में करना है। वश में अर्थात् जीतना है। हम दोनों किच-किच करें तो उसमें जीतेगा कौन? अगर मैं आपको समझा कर जीत जाऊँ तो फिर मैं आपको दुःख नहीं दूँगा न? और बगैर समझाए जीत जाऊँ तो ?

**प्रश्नकर्ता :** समाधान हो जाए तो मन कुछ नहीं बोलेगा।

**दादाश्री :** हाँ, समाधान वाला रास्ता होना चाहिए। आपको इस ब्रह्मचर्य के बारे में किसने सिखाया? ब्रह्मचर्य को लोग क्या समझते हैं? ये तो ऐसा समझते हैं कि 'घर में ऐसे झगड़े होते

रहते हैं इसलिए शादी करने में मज्जा नहीं है। अब अकेले ही रहें तो अच्छा है'।

**प्रश्नकर्ता :** यह सही है कि मन अभी जितना वैराग्य का बता रहा है उतना ही फिर कभी ऐसा भी बताएगा?

**दादाश्री :** दोनों रहेंगे। मन हमेशा विरोधाभासी होता है। मन का स्वभाव कैसा है? वह विरोधाभासी है, वह दोनों तरफ का दिखाएगा। इसलिए इससे सावधान रहने के लिए कहता हूँ।

**प्रश्नकर्ता :** एक बार मन ब्रह्मचर्य का, वैराग्य का बताएगा, वैसे ही राग का भी बताएगा, ऐसा है क्या?

**दादाश्री :** हाँ, अवश्य बताएगा! फिर वह राग का दिखाएगा।

**प्रश्नकर्ता :** ऐसा फॉर्स होता है क्या?

**दादाश्री :** उससे ज़्यादा भी हो सकता है और कम भी हो सकता है। उसका कोई नियम नहीं है।

**चलना है ब्रह्मचर्य के सिद्धांत के अनुसार**

**प्रश्नकर्ता :** इसमें हम सिद्धांत किसे कहेंगे?

**दादाश्री :** आपने जो निश्चय किया 'हो कि हमें ब्रह्मचर्य का पालन करना है तो फिर क्या मन की सुननी चाहिए?

**प्रश्नकर्ता :** फिर उस बारे में सुननी ही नहीं चाहिए।

**दादाश्री :** 'सुननी ही नहीं है,' अभी तो वह तो बहुत समझदारी की बात कर रहा है लेकिन अगर छः महीनों तक लगातार ऐसा कहे, तब तू क्या करेगा वहाँ? जब वह तुझे छोड़े

ही नहीं? अब, वह जब ऐसी बातें करेगा, तब देह भी नहीं छोड़ेगी। देह भी उसकी ओर मुड़ जाएगी। तब सभी एक ओर ही हो जाएँगे। वे सब तुझे फेंक देंगे। इसलिए ऐसा कह देना है, 'इतनी चीज़ें हमारे नियम से बाहर हैं, उनमें तुझे कुछ भी नहीं करना है।'

**प्रश्नकर्ता :** तो फिर वहाँ किस तरह से स्टेप लें?

**दादाश्री :** वहाँ स्ट्रोंग रहना। मैं कहता हूँ कि यदि ऐसा हो तो आप छोटी से छोटी बात के लिए भी स्ट्रोंग रहना। अगर ज़रा भी उसकी बात मान लोगे तो वह आपको फेंक देगा इसलिए उसे कह देना कि 'इतनी बातों में तुझे बिल्कुल भी हमारे नियम से बाहर नहीं चलना है। छोटी से छोटी बात में भी जागृति रखना वरना फिर वह ढीला पड़ जाएगा।

**प्रश्नकर्ता :** फिर अपने दूसरे सिद्धांत क्या हैं?

**दादाश्री :** इतना करोगे तो बहुत हो गया! फिर दूसरे के लिए क्यों रहे हो! बाकी का फिर चला लेंगे। तुझे करेले की सब्जी पसंद हो और मन कहे कि 'ज़्यादा खाओ' और यदि ध्येय को नुकसान नहीं करता है और थोड़ा ज़्यादा खा लिया तो चला लेंगे! क्या ऐसा नहीं कहा है आप लोगों को?

**पुरुषार्थ से रक्षा कर लो सिद्धांत की**

**प्रश्नकर्ता :** ब्रह्मचर्य का सिद्धांत तो अपना इन्डिविजुअल (व्यक्तिगत) सिद्धांत हुआ लेकिन जब दो लोगों के बीच व्यवहार खड़ा होता है तब मन बहुत कुछ दिखाता है और ज्ञान से देखने जाएँ तो पूरा ही, ऑन द स्पॉट सब खत्म हो जाता है लेकिन व्यवहार तो पूरा करना पड़ता है

न! उसकी ज़िम्मेदारी है और अगर उसके रिज़ल्ट (परिणाम) दूसरों को स्पर्श कर रहे हों, तब मन बताए तो क्या करना चाहिए?

**दादाश्री :** अपना मुख्य सिद्धांत नहीं टूटना चाहिए। 'ब्रह्मचर्य का पालन करना है', वह सिद्धांत नहीं टूटना चाहिए। बाकी सब तो खुद का व्यवहार सँभालने के लिए थोड़ा बहुत करना पड़ेगा। वहाँ पर तू सो मत जाना, यहाँ अपने घर पर सो जाना। वहाँ पर आपको ऐसा सब करना चाहिए लेकिन बाकी सब तो, ब्रह्मचर्य का पालन करना और अब्रह्मचर्य का सौदा करना, वे दोनों साथ में पुसाएँगे नहीं। उसके बजाय शादी कर लेना। दहीं में और दूध में दोनों में नहीं रह सकते। फिर अगर भगवान आ जाएँ तो भी 'नहीं मानूँगा', ऐसा कह देना। बाकी सब चला लेंगे। यदि आपको इस सिद्धांत का पालन करना हो, तो! वर्ना फिर कह देना कि मैं शादी कर लूँगा।

**प्रश्नकर्ता :** मन घेर ले, देह घेर ले ऐसी परिस्थिति उत्पन्न नहीं हो, उसके लिए उसके स्टार्टिंग पोइन्ट में (शुरुआत में) क्या सावधानी रखनी चाहिए?

**दादाश्री :** चारों तरफ से सभी संयोग घेर लेते हैं। देह भी बहुत पुष्टि देती है, मन भी पुष्टि देता है, बुद्धि उसकी मदद करती है। तब आपको अकेले को फेंक देंगे।

**प्रश्नकर्ता :** फिर तो खुद का नियंत्रण(वर्चस्व) नहीं रहता न, दादा? मन की सुनने लगे तभी से खुद का नियंत्रण चला गया न?

**दादाश्री :** मन की सुननी ही नहीं चाहिए। खुद आत्मा, चेतन है। मन, वह निश्चेतन चेतन है, उसमें बिल्कुल भी चेतन नहीं है। सिर्फ कहने के लिए ही, व्यवहार के खातिर ही चेतन कहलाता है।

वैसे तो जब तीन दिनों तक आपका मन पीछे पड़े तब उस समय आप उसे ऐसा कहोगे न! 'चलो, निकल जाओ अब यहाँ से' तेरा मन कभी पीछे पड़ा है? कभी ऐसा कुछ करना पड़ा है, क्या? पहले नहीं, नहीं करता है, फिर जब मन बहुत पीछे पड़े तब तू कर लेता है न?

**प्रश्नकर्ता :** हाँ ऐसा सब हुआ है।

**दादाश्री :** उसका क्या कारण है? मन बहुत बार कहता है इसलिए फिर उस रूप हो जाता है इसलिए सावधान रहना! आपका मन आपके (ब्रह्मचर्य के) अभिप्राय को खा न जाए, ऐसा होना चाहिए। अभिप्राय में रह कर वह जो भी काम करे, वह हमें एकसेप्ट है। आपके सिद्धांत को तोड़ने वाला होना ही नहीं चाहिए क्योंकि 'आप' ज्ञान ले कर स्वतंत्र हो गए हो। पहले तो 'आप' मन के अधीन ही थे। मन का चलता तन चले ऐसा ही था न!

**प्रश्नकर्ता :** अर्थात् ब्रह्मचर्य का सिद्धांत वह बहुत बड़ी चीज़ है और अनिवार्य चीज़ है।

**दादाश्री :** सिर्फ वही चीज़ है न! और सब से बड़ी चीज़ वही है न! पुरुषार्थ करने जैसी चीज़ वही है।

- जय सच्चिदानंद

### 'दादावाणी' के वार्षिक सदस्यों के लिए सूचना

आपको आपकी दादावाणी पत्रिका की सदस्यता समाप्त हो रही है उसका पता कैसे चलेगा? यदि आपको मिली इस महीने की दादावाणी पत्रिका के कवर पर लगे हुए लेबल पर ग्राहक नं. के बाद # हो तो यह आपकी अन्तिम दादावाणी पत्रिका है। उदा. DHIA12345#. दादावाणी पत्रिका रिन्यु कराने के लिए पेज नं. 3 पर दर्शाये गए मूल्य अनुसार मनी आर्डर या डिमान्ड ड्राफ्ट (पेयेबल अहमदाबाद) त्रिमंदिर अडालज के पते पर भेजें। साथ ही अपना नाम, पूरा पता (पिनकोड के साथ), फोन-मोबाइल नंबर, इ-मेल आदि आवश्यक जानकारी दें।



## प्रार्थना का महत्व, कर्म भुगतने में

**प्रश्नकर्ता :** दादा, मैं प्रश्न ऐसा पूछ रहा था कि जो प्रारब्ध बन चुका है, कोई बीमार पड़नेवाला है या किसीका कुछ नुकसान होनेवाला है, तो प्रार्थना से उसे बदल सकते हैं क्या?

**दादाश्री :** ऐसा है न, प्रारब्ध के भाग हैं। प्रारब्ध के प्रकार होते हैं। एक प्रकार ऐसा होता है कि वह प्रार्थना करने से उड़ जाता है। दूसरा प्रकार ऐसा है कि आप साधारण पुरुषार्थ करो तो उड़ जाता है। और तीसरा प्रकार ऐसा है कि आप चाहे जितना पुरुषार्थ करो, पर भुगते बिना चारा नहीं होता। बहुत गाढ़ होता है। तो किसी व्यक्ति अपने कपड़ों पर थूका, उसे ऐसे धोने जाएँ और वह हल्का हो तो पानी डालने पर धुल जाता है। बहुत गाढ़ हो तो?

**प्रश्नकर्ता :** नहीं निकलता।

**दादाश्री :** उसी प्रकार जो कर्म गाढ़ होते हैं, उन्हें निकाचित कर्म कहा है।

**प्रश्नकर्ता :** पर कर्म बहुत गाढ़ हों तो प्रार्थना से भी कुछ फ़र्क नहीं पड़ता?

**दादाश्री :** कुछ फ़र्क नहीं पड़ता। पर प्रार्थना से उस घड़ी सुख लगता है।

**प्रश्नकर्ता :** भुगतने की शक्ति मिलती है?

**दादाश्री :** नहीं, यह आपको जो दुःख आया है न, दुःख में सुख का भाग लगता है, प्रार्थना के कारण। पर प्रार्थना रह सके, वह मुश्किल है। ये संयोग खराब हों, और मन जब बिगड़ा हुआ हो, उस घड़ी प्रार्थना रहनी मुश्किल है। उस घड़ी रहे तो बहुत उत्तम कहलाता है। तब दादा भगवान जैसे को याद करके बुलाओ कि जो खुद शरीर में नहीं रहते हैं, शरीर के मालिक नहीं हैं, उन्हें यदि याद करके बुलाएँगे तो वह रहेगा, नहीं तो नहीं रहेगा।

**प्रश्नकर्ता :** वर्ना उन संयोगों में प्रार्थना याद ही नहीं आएगी?

**दादाश्री :** याद ही नहीं आएगी। याद को ही उड़ा देती है, भान ही उड़ जाता है सारा।

## देवी-देवताओं की मनौती का बंधन?

**प्रश्नकर्ता :** किसी भी देवी-देवता की मनौती रखने से कर्म बंधन होता है क्या?

**दादाश्री :** मनौती रखने से कर्म बंधन अवश्य होता है। मनौती अर्थात् क्या कि उनके पास से हमने मेहरबानी माँगी। इसलिए वे मेहरबानी करते भी हैं, और आप उसका बदला देते हो, और उससे ही कर्म बँधते हैं।

**प्रश्नकर्ता :** संत पुरुष के सहवास से कर्म बंधन छूटते हैं क्या?

**दादाश्री :** कर्म बंधन कम हो जाते हैं और पुण्य के कर्म बँधते हैं, पर वे उसे नुकसान नहीं करते। पाप के बंधन नहीं बँधते।

( परम पूज्य दादाश्री की ज्ञानवाणी में से संकलित )

**दादाई जगकल्याण मिशन - सत्संग हाइलाईट्स**

**22-23 नवम्बर :** भुवनेश्वर, उड़ीसा में पहली बार पूज्य श्री के सत्संग और ज्ञानविधि का कार्यक्रम आयोजित हुआ। जिस प्रकार जगन्नाथ पुरी में परंपरागत तरीके से भगवान जगन्नाथ का स्वागत किया जाता है, स्थानीय महात्माओं ने उसी प्रकार पूज्य श्री का स्वागत किया। स्थानीय महात्माओं की सहायता के लिए कोलकता सेन्टर से महात्मा आए थे। उन्हें भी पूज्य श्री के साथ एक घंटे के इन्फॉर्मल सत्संग का लाभ मिला। पहले दिन सत्संग में उड़िया भाषा में अनुवादित पुस्तक 'हुआ सो न्याय' का विमोचन किया गया। ज्ञानविधि में 500 मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान की प्राप्ति की जिनमें से अधिकतर मुमुक्षु उड़ीसा के विभिन्न शहरों से ज्ञान लेने आए थे। पूज्य श्री ने नैसर्गिक वातावरण में सेवार्थी महात्माओं के साथ सत्संग किया और सभी को दर्शन का लाभ भी मिला। संयोगवश उड़ीसा के प्रादेशिक दूरदर्शन चैनल पर पूज्य श्री का सत्संग कार्यक्रम हाल ही में शुरू हुआ है।

**29 नवम्बर से 3 दिसम्बर :** हरिद्वार के पातांजलि विद्यापीठ में हिन्दी में सत्संग शिविर का आयोजन हुआ जिसमें भारत भर से आए हुए 1500 महात्माओं ने भाग लिया। पहले दिन सुबह पाँच आज्ञा की समझ पर वर्क शॉप का कार्यक्रम हुआ। उसके बाद चार दिनों तक पूज्य श्री के विशेष सत्संग का आयोजन हुआ जिसमें पाँच आज्ञा की विशेष समझ, क्लेश मिटाने की कला, सेवा और सत्संग का महत्व जैसे टॉपिक्स का समावेश हुआ और साथ ही जनरल प्रश्नोत्तरी में महात्माओं ने अपने प्रश्नों के समाधान प्राप्त किए। दिनांक 2 दिसम्बर पूज्य नीरू माँ के 74 वें जन्मदिन के अवसर पर आयोजित समारोह में पूज्य श्री द्वारा केक काटा गया एवं शिविर में आए महात्माओं के बच्चों ने डान्स कार्यक्रम प्रस्तुत किया। साथ ही पूज्य नीरू माँ पर तैयार की गई स्पेशल डीवीडी भी दिखाई गई। रात को सभी ने भक्ति और गरबा में भाग लिया अंतिम दिन, 'दादा दरबार' में पूज्य श्री के दर्शन के साथ महात्माओं को उनके साथ बातचीत करने का अवसर भी मिला। शिविर में सभी महात्माओं को ज्ञान के अदभुत अनुभव हुआ। पूज्य श्री के हाथों हिन्दी में अनुवादित ग्रंथ आप्तवाणी 13 (उ.)का विमोचन भी हुआ।

**7 से 15 दिसम्बर :** पिछले साल सौराष्ट्र के 4-5 सेन्टरों में लगातार, एक के बाद एक आयोजित किए गए ज्ञानविधि कार्यक्रम को मिली सफलता को ध्यान में रखकर इस बार बोटाद, भावनगर, राजुला एवं सावरकुंडला, इन चार सेन्टरों में ज्ञानविधि का कार्यक्रम आयोजित किया गया। ज्ञानविधि से पहले और उसके बाद के दिन आप्तपुत्रों द्वारा सत्संग कार्यक्रम आयोजित किया गया। बाइक और कार रेली के साथ, सिर पर साफा बाँधे, ध्वजा फहराते, बैन्ड-बाजा बजाते हुए, नन्हीं बालिकाएँ सिर पर कलश लिए हुए, इस तरह अलग-अलग सेन्टरों द्वारा पूज्य श्री का भव्य स्वागत किया गया।

बोटाद और भावनगर में 900-900, राजुला में 1125 और सावरकुंडला में 1300 मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान की प्राप्ति की। स्थानीय महात्मा एवं सेवार्थियों को अधिक लाभ मिले, इस हेतु से सेवार्थी सत्संग, पूज्य श्री के दर्शन, मोर्निंग एवं इवनिंग वॉक इत्यादि का आयोजन किया गया। पूज्य श्री द्वारा राजुला में 150 एवं सावरकुंडला में 250 महात्मा बैठ सकें, ऐसे नए सत्संग हॉल का उद्घाटन किया गया। सत्संग यात्रा के अंतिम दिन पूज्य श्री अमरेली त्रिमंदिर दर्शन करने पधारे। वहाँ स्थानीय महात्माओं के साथ सत्संग भी किया। अमरेली त्रिमंदिर सेवार्थियों से व्यक्तिगत बातचीत करके उनका मार्गदर्शन किया। लोगों को दादा के आत्म विज्ञान से परिचित करवा कर ज्ञान लेने के लिए प्रेरित करने के हेतु से ज्ञानविधि के आयोजन से पहले ही महात्माओं ने घर-घर जाकर प्रचार, प्रोजेक्टर शो किए व आप्तपुत्र सत्संगों का आयोजन हुआ।

## दादावाणी

### पूज्य नीरूमाँ को देखिए टी.वी. चैनल पर...

- भारत**
- ✦ 'साधना' टीवी पर हर रोज सुबह 7 से 7-30 (हिन्दी में)
  - ✦ 'दूरदर्शन'-मध्यप्रदेश पर सोम से शनि दोपहर 3-30 से 4, रवि शाम 6 से 6-30 (हिन्दी में)
  - ✦ 'दूरदर्शन'-गिरनार हर रोज पर सुबह 9 से 9-30 (गुजराती में)
  - ✦ 'अरिहंत' पर हर रोज सुबह 3 से 3-30 तथा शाम 5 से 5-30 (गुजराती में)
- USA-Canada**
- ✦ 'TV Asia' पर हर रोज, सुबह 7-30 से 8 EST (गुजराती में)
  - ✦ 'SAB-US' पर हर रोज सुबह 7 से 7-30 EST
- UK**
- ✦ 'वीनस' टीवी पर हर रोज सुबह 8 से 8-30 (हिन्दी में)
  - ✦ 'SAB-UK' पर हर रोज सुबह 7-30 से 8 - Western European Time (6.30am-7am GMT)
  - ✦ 'Rishtey-UK' पर हर रोज सुबह 7 से 7-30 Western European Time (6am-6-30am GMT)
- Singapore**
- ✦ 'SAB- International' पर हर रोज सुबह 8-30 से 9 (हिन्दी में)
- Australia**
- ✦ 'SAB- International' पर हर रोज सुबह 11-30 से 12 (हिन्दी में)
- New Zealand**
- ✦ 'SAB- International' पर हर रोज दोपहर 1-30 से 2 (हिन्दी में)

### पूज्य दीपकभाई को देखिए टी.वी. चैनल पर...

- भारत**
- ✦ 'दूरदर्शन'-नेशनल पर सोम से शनि सुबह 8-30 से 9, रवि सुबह 6-30 से 7
  - ✦ 'दूरदर्शन'-बिहार पर हर रोज सुबह 7 से 7-30 तथा शाम 6-30 से 7, शुक्र शाम 5 से 5-30 (हिन्दी में)
  - ✦ 'दूरदर्शन'-उत्तरप्रदेश पर सोम से शनि रात 8-30 से 9 (हिन्दी में)
  - ✦ 'उड़ीसा प्लस' टीवी पर सुबह 7-30 से 8 (हिन्दी में)
  - ✦ 'दूरदर्शन' गुजरात - गिरनार पर सोम से शनि दोपहर 3-30 से 4 (गुजराती में)
  - ✦ 'दूरदर्शन' गिरनार पर हर रोज रात 10 से 10-30 (गुजराती में)
  - ✦ 'अरिहंत' चैनल पर हर रोज रात 8 से 9 (गुजराती में)
  - ✦ 'दूरदर्शन'-सह्याद्रि पर हर रोज सुबह 7 से 7-30 (मराठी में)
  - ✦ 'दूरदर्शन'-चंदना पर सोम से शुक्र रात 7-30 से 8 (कन्नड़ में)
- USA -Canada**
- ✦ 'Rishtey-USA' पर हर रोज सुबह 7-30 से 8 (हिन्दी में) EST
- UK**
- ✦ 'वीनस' टीवी पर हर रोज सुबह 8-30 से 9 (गुजराती में)
- Singapore**
- ✦ 'कलर्स' टीवी पर हर रोज सुबह 4-30 से 5 तथा सुबह 7 से 7-30 (हिन्दी में)
- Australia**
- ✦ 'कलर्स' टीवी पर हर रोज सुबह 7-30 से 8 तथा सुबह 10 से 10-30 (हिन्दी में)
- New Zealand**
- ✦ 'कलर्स' टीवी पर हर रोज सुबह 9-30 से 10 तथा रात 12 से 12-30 (हिन्दी में)
- CAN-Fiji-NZ-Sing.-SA-UAE** ✦ **Rishtey-Asia** पर हर रोज सुबह 7-30 से 8 (हिन्दी में) UAE Time (9am-9-30am IST)
- USA-UK-Africa-Aus.** ✦ 'आस्था' (डीश टीवी चैनल 849-युके, 719-युएसए) पर सोम से शुक्र रात 10 से 10-30

### 'दादावाणी' के सभी सदस्यों के लिए सूचना

हिन्दी और अंग्रेजी भाषाओं में दादावाणी पत्रिका हर महिने 15वीं तारीख को पोस्ट की जाती है। जिन महात्माओं को 'दादावाणी' पत्रिका विलंब से या तो अनियमित रूप से मिलती है, वे पूर्व प्राप्त पत्रिका के कवर पर अपना नाम, पता, पीनकोड आदि जाँच कर लें। यदि उसमें कोई भूल हो तो आपका ग्राहक नं., पूरा नाम-पता, पीनकोड के साथ लिखकर मोबाईल नं. 8155007500 पर SMS करें। आप अडालज त्रिमंदिर के पते पर पत्र से या [dadavani@dadabagwan.org](mailto:dadavani@dadabagwan.org) इ-मेल आइडी पर इ-मेल से भी सूचित कर सकते हैं। जिससे आपकी यहाँ दर्ज की गई जानकारी में सुधार किया जा सके। यदि आपको दादावाणी का अंक न मिले तो उपर दिए गए कोई भी माध्यम से हमें सूचित करें। यदि अंक स्टोक में होगा तो आपको फिर से भेजा जाएगा।

## दादावाणी

### आत्मज्ञानी पूज्य नीरू माँ और पूज्य दीपकभाई के आशीर्वाद प्राप्त आप्तपुत्रों के सत्संग कार्यक्रम

<b>गोवा-मडगाँव</b>	दिनांक : 4 फरवरी	समय : सुबह 10-30 से 12-30	संपर्क : 7972862416
स्थल : गुजराती समाज एज्युकेशनल ट्रस्ट हॉल, मारुती मंदिर के नजदीक, दवरली, मडगाँव, गोवा.			
<b>गोवा-फोंडा</b>	दिनांक : 4 फरवरी	समय : शाम 4-30 से 7	संपर्क : 8698745655
स्थल : होटल यशोदा डीलक्स, सारस्वत बैंक के उपर, फोंडा, गोवा.			
<b>निपानी</b>	दिनांक : 6 फरवरी	सुबह 10 से 12	संपर्क : 9902346946
स्थल : विष्णु निवास, मुरगुद रोड, निपानी.			
<b>कोल्हापुर</b>	दिनांक : 6 और 7 फरवरी	समय : शाम 5 से 7	संपर्क : 9960787776
स्थल : गीता मंदिर, तारा रानी चौक, कावला नाका, अयोध्या होटल के पास, कोल्हापुर.			
<b>सांगली</b>	दिनांक : 8 फरवरी	समय : शाम 4-30 से 6-30	संपर्क : 9423870798
स्थल : पाटीदार भवन, सर्किट हाउस के पास, माधव नगर रोड, सांगली.			
<b>हुबली</b>	दिनांक : 11 फरवरी	समय : शाम 5-30 से 8	संपर्क : 9513216111
स्थल : एन. के. सभाग्रह, केशवापुर सर्किल, हुबली.			
<b>हुबली</b>	दिनांक : 12 फरवरी	समय : दोपहर 3-30 से 6	संपर्क : 9900525654
स्थल : श्री लक्ष्मीनारायण पाटीदार समाज, न्यू टिम्बर यार्ड, उन्कल, हुबली.			
<b>धारवाड</b>	दिनांक : 13 फरवरी	समय : रात 8 से 10	संपर्क : 9480370961
स्थल : श्री कच्छ कडवा पाटीदार समाज, KMF के पास, धारवाड.			
<b>अथानी</b>	दिनांक : 9 फरवरी	समय एवं स्थल की जानकारी हेतु	संपर्क : 8050170137
<b>बेलगाम</b>	दिनांक : 10-11 फरवरी	समय एवं स्थल की जानकारी हेतु	संपर्क : 9945894202
<b>हैदराबाद</b>	दिनांक : 10-11 फरवरी	समय एवं स्थल की जानकारी हेतु	संपर्क : 9885058771
<b>गडग</b>	दिनांक : 13 फरवरी	समय एवं स्थल की जानकारी हेतु	संपर्क : 9481734299
<b>हावेरी</b>	दिनांक : 14 फरवरी	समय एवं स्थल की जानकारी हेतु	संपर्क : 9663497478
<b>दावणगेरे</b>	दिनांक : 14 फरवरी	समय एवं स्थल की जानकारी हेतु	संपर्क : 9008459001
<b>बेलगाम</b>	दिनांक : 16 फरवरी	समय एवं स्थल की जानकारी हेतु	संपर्क : 9945894202
<b>बेलगाम</b>	दिनांक : 17-18 फरवरी	समय एवं स्थल की जानकारी हेतु	संपर्क : 9945894202
<b>चेन्नई</b>	दिनांक : 17-18 फरवरी	समय एवं स्थल की जानकारी हेतु	संपर्क : 7200740000

त्रिमदिरो के संपर्क : अडालज : (079) 39830100, राजकोट : 9924343478, भूज : 9924345588, गोधरा : 9723707738, अंजार : 9924346622, मोरबी : (02822) 297097, सुरेन्द्रनगर : 9737048322, अमरेली : 9924344460, वडोदरा : 9574001557  
अन्य सेन्ट्रों के संपर्क : अहमदाबाद : (079) 27540408, मुंबई : 9323528901, वडोदरा (दादा मंदिर) : 9924343335,  
दिल्ली : 9810098564, बैंगलूर : 9590979099, कोलकता : 9830093230  
यु.एस.ए.-केनेडा : +1 877-505-DADA (3232), यु.के. : +44 330-111-DADA (3232), ऑस्ट्रेलिया : +61 421127947

## दादावाणी

### आत्मज्ञानी पूज्य दीपकभाई के सानिध्य में आगामी सत्संग कार्यक्रम

#### आणंद

5 व 7 फरवरी (सोम व बुध) शाम 7 से 10 - आप्तपुत्र सत्संग

6 फरवरी (मंगल) शाम 6-30 से 10 - ज्ञानविधि

स्थल : व्यायामशाला ग्राउन्ड, लोटीया भागोल, समधरदार पार्टी प्लोट के सामने, आणंद (गुजरात). संपर्क : 9898026589

#### गोधरा

7 व 9 फरवरी (बुध व शुक्र) शाम 6 से 9 - आप्तपुत्र सत्संग तथा 8 फरवरी (गुरु) शाम 5-30 से 9 - ज्ञानविधि

स्थल : त्रिमंदिर, भामैया गाँव, FCI गोडाउन के सामने, गोधरा, जि.-पंचमहाल (गुजरात). संपर्क : 9825431503

#### वडोदरा

10 फरवरी (शनि) शाम 7-30 से 10-30 - सत्संग (टोपिक-स्वार्थ-परमार्थ : सांसारिक-धर्मिक)

11 फरवरी (रवि) शाम 5-30 से 9 - ज्ञानविधि

12 फरवरी (सोम) शाम 7-30 से 10-30 - आप्तपुत्र सत्संग

स्थल : अव्यप्पा मंदिर ग्राउन्ड, न्यु समा रोड, समा, वडोदरा (गुजरात).

संपर्क : 9924343335

#### मुंबई में...

#### वाशी

12 व 14 फर. (सोम व बुध) शाम 6-30 से 9-30 - आप्तपुत्र सत्संग तथा 13 फर. (मंगल) शाम 6 से 9-30 - ज्ञानविधि

स्थल : देशभक्त बाबु गेनु ग्राउंड, Sec-17, रेमंड शोरूम के सामने, चड्ढा क्रेसेंट, CHSL के पीछे, वाशी. संपर्क : 9323528901

#### मीरा रोड

14 व 16 फरवरी (बुध व शुक्र) शाम 6-30 से 9-30 - आप्तपुत्र सत्संग तथा 15 फर. (गुरु) शाम 6 से 9-30 - ज्ञानविधि

स्थल : एस.के. स्टोन ग्राउंड, मीरा-भायंदर रोड, मीरा रोड (इस्ट).

संपर्क : 9323528901

#### विले पारले

16 फरवरी (शुक्र) शाम 6-30 से 9-30 - सत्संग (टोपिक-इमोशनल से सहजता की ओर)

17 फरवरी (शनि) शाम 6-30 से 9-30 - सत्संग (टोपिक-ज्ञानी की दृष्टि से सर्टिफाईड फादर-मदर)

18 फरवरी (रवि) शाम 5-30 से 9 - ज्ञानविधि

19 फरवरी (सोम) शाम 6-30 से 9-30 - आप्तपुत्र सत्संग

स्थल : जमनाबाई नरसी स्कूल ग्राउंड, ऑफ़िस मोल के सामने, JVPD स्कीम, विले पारले (वे.).

संपर्क : 9323528901

#### बेलगाम

20 फरवरी (मंगल) शाम 5 से 8 - सत्संग (टोपिक-ज्ञानी की शरण भव का भय मिटाये)

21 फरवरी (बुध) शाम 4-30 से 8 - ज्ञानविधि

स्थल : मराठा मंदिर सांस्कृतिक भवन, रेल्वे ओवर ब्रीज के पास, बेलगाम (कर्णाटक).

संपर्क : 8971668468

22 फरवरी (गुरु) शाम 5 से 8 - आप्तपुत्र सत्संग

स्थल : श्री जिनेश्वर भवन, मेईन रोड, वडगाँव, बेलगाम (कर्णाटक).

संपर्क : 8971668468

#### अहमदाबाद

3 मार्च (शनि) शाम 7-30 से 10-30 - सत्संग (टोपिक-परोपकार, सेवा-मानवधर्म)

4 मार्च (रवि) शाम 5 से 8-30 - ज्ञानविधि

5 मार्च (सोम) शाम 7-30 से 10-30 - आप्तपुत्र सत्संग

स्थल : The A.E.S. ग्राउन्ड, टी.वी. टावर के पीछे, बोडकदेव, अहमदाबाद (गुजरात).

संपर्क : 9824688399

जनवरी 2018  
वर्ष-13 अंक-3  
अखंड क्रमांक - 147

## दादावाणी

Date Of Publication On 15<sup>th</sup> Of Every Month  
RNI No. GUJHIN/2005/17258  
Reg. No. GAMC - 1500/2018-2020  
Valid up to 31-12-2020  
LPWP Licence No. PMG/HQ/36/2017  
Valid up to 31-12-2020  
Posted at AHD. P.S.O. Sorting Office Set - 1  
on 15th of each month.



### बचपन से जीवन में नियम ही ऐसा ...

मैं तो बचपन से यही सीखा हूँ। 'भाई, तू मुझ से मिले और यदि तुझे मुझसे कोई सुख प्राप्त नहीं हो तो तेरा मुझ से मिलना बेकार है', उनसे मैं ऐसा कहता था! वह चाहे कितना भी नालायक हो, वह मुझे नहीं देखना है लेकिन मैं तुझ से मिलूँ लेकिन यदि मेरी ओर से सुगंधी नहीं आए तो ऐसा कैसे चलेगा? अगरबत्ती नालायकों को सुगंधी देती है या नहीं देती? उसी प्रकार यदि तुझे मेरी सुगंधी न आए तो फिर वह मेरी सुगंधी कहलाएगी ही नहीं। अर्थात् हरेक को कुछ तो लाभ होना ही चाहिए, ऐसा नियम मेरा शुरू से ही रहा है। मुझे खुद को जो सुख उत्पन्न हुआ, इसलिए भावना हुई कि लोगों को भी ऐसा ही सुख मिले। हमारी भावना है कि लोगों का कल्याण हो। जैसा हमारा हुआ, वैसा सभी का कल्याण हो।

- दादाश्री



Printed and Published by Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation -  
Owner. Printed at Amba Offset, B-99, GIDC, Sector - 25, Gandhinagar - 382025.